

चिंतन मनन

पुतिन की मंशा

लंबे तनाव के बाद रूस ने गुरुवार सुबह साढ़े आठ बजे यूक्रेन पर हमला बोल दिया। मिसाइल हमले में यूक्रेन के कई नागरिकों की मौत हो गई है। रूस की फौज यूक्रेन के कई इलाकों में पहुंच चुकी है। कई पैराट्रूपर्स यूक्रेन के मिलिट्री इंस्टीट्यूट्स पर उतारे गए हैं। उधर, यूक्रेन का दावा है कि उसने 6 रूसी फाइटर जेट्स को मार गिराया है। बताया जाता है कि यूक्रेन के कई गांव पर रूसी सेना का कब्जा हो गया है। यहां सिलसिलेवार धमाके हो रहे हैं। इस बीच, बेलारूस बॉर्डर से भी रूस ने हमला बोल दिया। रूस अब तीन तरफ से यूक्रेन पर हमले कर रहा है। वहीं रूस ने दावा किया है कि यूक्रेन की सेना ने सरेंडर करना शुरू कर दिया है। इन सबके बीच सवाल यह है कि पुतिन क्या वाकई रूस को सोवियत संघ जैसी महाशक्ति बनाना चाहते हैं या मास्को की सत्ता पर अपना 23 साल पुराना कब्जा पुख्ता करना चाहते हैं। क्या वाकई एक सुरक्षित रूस के लिए यूक्रेन को नाटो से दूर रखना ही उनका मकसद है? 1991 में सोवियत संघ के बिखरने के बाद बने यूक्रेन को शुरू से ही रूस अपने पाले में करने की कोशिशें करता आया है। हालांकि, यूक्रेन रूसी प्रभुत्व से खुद को बचाए रखने के लिए पश्चिमी देशों की ओर झुका रहा। दरअसल, यूक्रेन की रूस के साथ 2200 किमी से ज्यादा लंबी सीमा है। रूस का मानना है कि अगर यूक्रेन नाटो से जुड़ता है तो नाटो सेनाएं यूक्रेन के बहाने रूसी सीमा तक पहुंच जाएंगी। उधर, अमेरिका भी अपनी हरकत से बाज नहीं आ रहा है। सोवियत संघ के टूटने के बाद 15 से ज्यादा यूरोपीय देश नाटो में शामिल हो चुके हैं। अब वह यूक्रेन को भी नाटो में शामिल करना चाहता है। इसीलिए रूस चाहता है कि यूक्रेन ये गारंटी दे कि वह कभी भी नाटो से नहीं जुड़ेगा। रूस का राष्ट्रपति बनने के बाद से ही व्लादिमीर पुतिन कई बार ये कह चुके हैं कि सोवियत संघ का विघटन ऐतिहासिक भूल थी। पुतिन रूस के सोवियत संघ वाले दिन लौटाना चाहते हैं। 1991 में रूसी प्रभुत्व वाले सोवियत संघ के विघटन से 15 नए देश बने थे, जिनमें से एक यूक्रेन भी था। पुतिन रूस का विस्तार करके उसका पुराना प्रभुत्व कायम करना चाहते हैं। पुतिन की इस महत्वाकांक्षी योजना के लिए यूक्रेन सबसे महत्वपूर्ण है। 2015 में अपने एक भाषण में पुतिन ने यूक्रेन को रूस का मुकुट कहा था। कुल मिलाकर पुतिन धीरे-धीरे रूस के विस्तार करने की अपनी रणनीति में आगे बढ़ते और कुछ हद तक कामयाब होते भी दिख रहे हैं। 1999 में रूस के राष्ट्रपति बनने के बाद से ही व्लादिमीर पुतिन ने खुद को सत्ता में बनाए रखने के लिए हर संभव कोशिश की है। अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद हाल के वर्षों में पुतिन की लोकप्रियता में गिरावट आई है। अक्टूबर 2021 में आए लेवाडा सेंटर सर्वे के मुताबिक, पुतिन की लोकप्रियता पिछले एक दशक के न्यूनतम स्तर पर पहुंच गई है। यूक्रेन पर हमले से पहले भी पुतिन की लोकप्रियता में इजाफा हो चुका है, इसीलिए पुतिन फिर वैसा ही करके अपनी साख को फिर ऊंचा करना चाहते हैं। 16 साल रूसी खूफिया एजेंसी में काम करने के बाद पुतिन 1991 में राजनेता बने थे। 1999 में वह बोरोस येल्टसिन के पद छोड़ने के बाद बाद रूस के राष्ट्रपति बने। 2004 में वह दोबारा राष्ट्रपति चुने गए, लेकिन रूसी संविधान के अनुसार लगातार दो बार से ज्यादा राष्ट्रपति नहीं बनने के नियम के बाद वह 2008 से 2012 तक रूस के प्रधानमंत्री रहे। 2012 में पुतिन फिर से रूस के राष्ट्रपति बने और तब से पद पर कायम हैं। 2020 में रूसी संविधान में बदलाव से उनके 2036 तक रूस का राष्ट्रपति बने रहने का रास्ता साफ हो गया था। दुनिया के कच्चे तेल के उत्पादन में रूस की हिस्सेदारी 13 फीसदी है। दुनिया के तेल और गैस का करीब 30 फीसदी हिस्सा रूस से आता है। यूरोप की जरूरतों का 30 फीसदी कच्चा तेल और 40 फीसदी गैस रूस से आती है। यूक्रेन संकट के बीच कच्चे तेल की कीमतों 100 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई हैं, जो सितंबर 2014 के बाद से सबसे ज्यादा हैं। युद्ध की स्थिति में तेल की कीमतों के और बढ़ने की आशंका है, ऐसा होने पर रूस की कमाई में इजाफा हो सकता है। 2021 के अंत में यूक्रेन संकट बढ़ने पर रूस ने यूरोप को गैस सप्लाई में कटौती की थी, जिससे यूरोपीय देशों में बिजली की कीमत पांच गुना तक बढ़ गई थी। कई यूरोपीय सदस्य देश अपनी गैस की जरूरतों के लिए रूस पर बुरी तरह निर्भर हैं।

उनको लेकर आओ!



संकट की इस घड़ी में ।

दो अपनों पर ध्यान ॥

जो वहां पर है फंसा ।

है सांसत में जान ॥

बिगड़ गया माहौल ।

उनको लेकर आओ ॥

सो रहा जो तंत्र ॥

उसको जरा जगाओ ॥

जो होना था हो गया ।

आगे करो उपाय ॥

बढ़े मदद को हाथ ।

आज जो असहाय ॥

हो तुरंत वापसी ।

जो हैं रहे पुकार ॥

हैं पड़े मझधार में ।

आने को तैयार ॥

—कृष्णोन्द्र राय

हरीश रावत मुख्यमंत्री के रूप में पहली चाहत!

पहाड़ हो या मैदान, शहर हो या गांव, घर हो या चौपाल, शायद ही ऐसी कोई जगह हो, जहां पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत का कोई न कोई कार्यक्रम मौजूद न हो। प्रत्येक कार्यक्रमों के दुःख-सुख के साथी कहे जाने वाले हरीश रावत की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि उन्हें अपने हर कार्यक्रमों का नाम याद रहता है। किस कार्यक्रमों से उन्हें क्या काम लेना है, कैसे काम लेना है और उन्हें क्या सम्मान देना है, यह भी हरीश रावत को बखूबी आता है। मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए भी और मुख्यमंत्री की कुर्सी से उतरने के बाद भी वे अपने कार्यक्रमों वही मान सम्मान देते रहे हैं जो पहले से देते आए हैं। छोटे से छोटे कार्यक्रमों के महत्व और सम्मान को तरजीह देने में माहिर हरीश रावत को अपने कार्यक्रमों के बीच रहकर विशेष उर्जा मिलती है। तभी तो मुख्यमंत्री आवास रहा हो या उनकी कोई जनसभा या फिर उनका अन्य कोई कार्यक्रम, जब तक कार्यक्रमों से वे घिरे न हो तब तक उन्हें आनन्द की अनुभूति नहीं होती। अपने छोटे से छोटे घरेलू कार्यक्रमों में भी वे अपने आम और खास कार्यक्रमों को आमन्त्रित करना नहीं भूलते, वही यह भी कौशिल्य करते हैं कि वे सभी कार्यक्रमों के यहां भी उनके सुख-दुःख के अवसर पर हाजिरी दें। उनके इसी गुण के कारण उनके कार्यक्रमों उनके लिए उनके विरोधियों से भी भिड़ जाते हैं और हरीश रावत के पैरोकार बनकर चुनाव के समय की उन्हे सफलता के सौपान तक पहुंचाते हैं। हालांकि हरीश रावत को कई बार चुनावी असफलताएं भी झेलनी पड़ी परन्तु न तो हरीश रावत का और न ही उनके कार्यक्रमों का कभी मनोबल कम हुआ है। आज भी ऐसे कई कार्यक्रमों हैं, जिन्हें हरीश रावत सरकार बन जाने पर भी कुछ नहीं दे पाए, लेकिन न तो हरीश रावत यह बात

भूलते हैं और न ही उनके वे कार्यक्रमों उनसे रूठते हैं। वे फिर भी कन्धे से कन्धा मिलाकर हरीश रावत के उत्तराखण्डियत मिशन में न सिर्फ भागीदार बन रहे हैं बल्कि आमजन के बीच जाकर हरीश रावत सरकार के समय की उपलब्धियों को भी बता रहे हैं। तभी तो पहाड़ के संरक्षण, संवर्धन और विकास के लिए



उत्तराखण्ड राज्य की जो विकास परिकल्पना की गई थी वह विकास परिकल्पना अब कांग्रेस सरकार आने पर साकार हो सकेगी। राज्य के समग्र विकास के साथ चार धाम यात्रा, अमरनाथ यात्रा और मानसरोवर यात्रा रावत के पैरोकार बनकर चुनाव के समय की उन्हे सफलता के सौपान तक पहुंचाते हैं। हालांकि हरीश रावत को कई बार चुनावी असफलताएं भी झेलनी पड़ी परन्तु न तो हरीश रावत का और न ही उनके कार्यक्रमों का कभी मनोबल कम हुआ है। आज भी ऐसे कई कार्यक्रमों हैं, जिन्हें हरीश रावत सरकार बन जाने पर भी कुछ नहीं दे पाए, लेकिन न तो हरीश रावत यह बात

रूप न देने पर भी हरीश रावत ने अपनी सरकार के समय विकास का पहिया रुकने नहीं दिया था। राज्य को विकास व उपलब्धियों के रास्ते पर ले चलने में कामयाब हो जाने पर भी हरीश रावत को पिछले चुनाव में जीत नहीं मिल सकी थी जिसके पीछे आम जनता तक पहुंच बनाकर आम जनता



को कांग्रेस व सरकार की उपलब्धियां न बताने से जीत के लक्ष्य को प्राप्त करने में कांग्रेस विफल रही थी। उत्तराखण्ड की राजनीति में कांग्रेस के वर्चस्व को बनाये रखने और मिशन 2022 को फतेह करने के लिए कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल और पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत एक राय होकर चल रहे हैं। हरीश रावत पार्टी की मजबूती के लिए चुनाव पूर्व चलाये गए प्रदेश व्यापी सदस्यता अभियान को सफल बनाने में कारगर सिद्ध हुए हैं। विपत्ति वातावरण के बावजूद कांग्रेस को मजबूत करने की तैयारी हरीश रावत लंबे समय से जीजान से जुटे रहे हैं। पहाड़ व मैदान के

विकास कार्यों में कोई ठहराव न आने पाए। जिस पहाड़ और मैदान की संस्कृति तथा उसके भोलेपन पर सारी दुनिया फिदा है, उसके महत्व को हरीश रावत ने ही समझा है। पहाड़ की हरियाली, उसकी खूबसूरती, उसकी जड़ी बूटी व पहाड़ी व मैदानी व्यंजनों जैसी विरासत को बचाने के लिए हरीश रावत हमेशा सक्रिय रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत की सोच है कि पहाड़ी क्षेत्रों में रहकर पहाड़ की सांस्कृतिक विरासत को जिन्दा रख जाए क्योंकि जब तक पहाड़ को अपनी आत्मा समझकर हम पहाड़ को संरक्षित करने की पहल नहीं करेंगे जब तक पहाड़ की मजबूती और सुन्दरता के लिये पहाड़ पर नये विकास को रोपण नहीं करेंगे जब तक विकास के नाम पर बारूद से पहाड़ तोड़ने के लिये विस्फोट करना बन्द नहीं करेंगे जब तक पहाड़ में आत्म स्वावलम्बन के लिये रोजगार का सृजन नहीं करेंगे तब तक पहाड़ को बचा

इमरान खान मास्को में

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान आज रूस पहुंच गए हैं। लगभग 22 साल पहले प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के बाद किसी पाकिस्तानी प्रधानमंत्री की यह पहली मास्को-यात्रा है। इमरान और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की ऐसे संकट के समय इस भेंट पर लोगों को बहुत आश्चर्य हो रहा है, क्योंकि पाकिस्तान कई दशकों तक उस समय अमेरिका का दुमछल्ला बना हुआ था, जब अमेरिका और सोवियत संघ का शीतयुद्ध चल रहा था। सोवियत संघ के बिखराव के बाद जब अमेरिका और रूस के बीच का तनाव थोड़ा घटा था, तब पाकिस्तान ने रूस के साथ संबंध बनाने की कोशिश की थी। परना अफगानिस्तान में चल रही बबरक कारमल की सरकार के विरुद्ध मुजाहिदीन की पीठ टोककर पाकिस्तान तो अमेरिकी मोहरों की तरह काम कर रहा था। उन्हीं दिनों अमेरिका अपने संबंध चीन के साथ भी नए ढंग से परिभाषित कर रहा था। इसी का फायदा पाकिस्तान ने उठाया। वह भारत के प्रतिद्वंद्वी चीन के साथ तो कई वर्षों से जुड़ा ही हुआ था। उसने कश्मीर की हजारां मील जमीन भी चीन को सौंप रखी थी। अब जबकि चीन और रूस के संबंध घनिष्ठ हो गए तो उसका फायदा उठाने में पाकिस्तान पूरी मुस्तैदी दिखा रहा है। पिछले दिनों अलामिक खेलों के उदघाटन के अवसर पर पुतिन के साथ-साथ इमरान भी पेशचिंग गए हैं। अब इमरान उस समय मास्को पहुंच रहे हैं, जबकि पुतिन ने यूक्रेन के तीन टुकड़े कर दिए हैं। मास्को पहुंचनेवाले वे पहले मेहमान हैं।

विनायक दामोदर सावरकर की पुण्यतिथि

विनायक दामोदर सावरकर (जन्म: 28 मई 1883 - मृत्यु: 26 फरवरी 1966) भारत के महान क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी, समाजसुधारक, इतिहासकार, राष्ट्रवादी नेता तथा विचारक थे। उन्हें प्रायः स्वातन्त्र्यवीर , वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। हिन्दू राष्ट्रवाद की राजनीतिक विचारधारा ('हिन्दुत्व') को विकसित करने का बहुत बड़ा श्रेय सावरकर को जाता है। वे एक वकील, राजनीतिज्ञ, कवि, लेखक और नाटककार भी थे। उन्होंने परिवर्तित हिन्दुओं के हिन्दू धर्म को वापस लौटाने हेतु सतत प्रयास किये एवं इसके लिए आन्दोलन चलाये। उन्होंने भारत की एक सामूहिक "हिन्दू" पहचान बनाने के लिए हिंदुत्व का शब्द गढ़ा। उनके राजनीतिक दर्शन में उपयोगितावाद, तर्कवाद, प्रत्यक्षवाद , मानवतावाद, सार्वभौमिकता, व्यावहारिकता और यथार्थवाद के तत्व थे। सावरकर एक कट्टर तर्कबुद्धिवादी व्यक्ति थे जो सभी धर्मों के रूढ़िवादी विश्वासों का विरोध करते थे।

1904 में उन्होंने अभिनव भारत नामक एक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की। 1905 में बंगाल के विभाजन के बाद उन्होंने पुणे में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। फर्ग्युसन कॉलेज, पुणे में भी वे राष्ट्रपतिक से ओत-प्रोत ओजस्वी भाषण देते थे। बाल गंगाधर तिलक के अनुमोदन पर 1906 में उन्हें श्यामजी कृष्ण वामां छत्रवृत्ति मिली। सावरकर ने लन्दन के ग्रेज इन लॉ कॉलेज में प्रवेश लेने के

बाद इण्डिया हाउस में रहना आरम्भ कर दिया था। इण्डिया हाउस उस समय राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र था जिसें श्याम प्रसाद मुखर्जी चला रहे थे। सावरकर ने 'फ्री इण्डिया सोसायटी' का निर्माण किया जिससे वो अपने साथी भारतीय छात्रों को स्वतन्त्रता के लिए लड़ने को प्रेरित करते थे।

लन्दन में रहते हुये उनकी मुलाकात लाला हरदयाल से हुई जो उन दिनों इण्डिया हाउस की देखरेख करते थे। 1 जुलाई 1909 को मदनलाल दींगरा द्वारा विलियम हट कर्जन वायली को गोली मार दिये जाने के बाद उन्होंने लन्दन टाइम्स में एक लेख भी लिखा था। 13 मई 1910 को पैरिस से लन्दन पहुँचने पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया परन्तु 8 जुलाई 1910 को एमएएस मौरिया नामक जहाज से भारत ले जाते हुए सीवर होल के रास्ते ये भाग निकले। 24 दिसम्बर 1910 को उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गयी। इसके बाद 31 जनवरी 1911 को इन्हें दोबारा आजीवन कारावास दिया गया। इस प्रकार सावरकर को ब्रिटिश सरकार ने क्रांति कार्यों के लिए दो-दो आज़म करारवास की सजा दी, जो विश्व के इतिहास की पहली एवं अनेखी सजा थी। सावरकर के अनुसार - मातृभूमि! तेरे चरणों में पहले ही मैं अपना मन अर्पित कर चुका हूँ। देश-सेवा ही ईश्वर-सेवा है, यह मानकर मैंने तेरी सेवा के माध्यम से भगवान की सेवा की।

नासिक जिले के कलेक्टर

जैकसन की हत्या के लिए नासिक षडयंत्र काण्ड के अन्तर्गत इन्हें 7 अप्रैल, 1911 को काला पानी की सजा पर सेलुलर जेल भेजा गया। उनके अनुसार यहां स्वतंत्रता सेनानियों को कड़ा परिश्रम करना पड़ता था। सावरकर 4 जुलाई, 1911 से 21 मई, 1921 तक पोर्ट ब्लेयर की जेल में रहे।

1920 में वल्लभ भाई पटेल और बाल गंगाधर तिलक के कहने पर ब्रिटिश कानून ना तोड़ने और विद्रोह ना करने की शर्त पर उनकी रिहाई हो गई। 1921 में मुक्त होने पर वे स्वदेश लौटे और फिर 3 साल जेल भोगी। जेल में उन्होंने हिन्दुत्व पर शोध ग्रन्थ लिखा।1937 में वे अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के कर्मावती (अहमदाबाद) में हुए 19वें सत्र के अध्यक्ष चुने गये, जिसके बाद वे पुनः सात वर्षों के लिये अध्यक्ष चुने गये। 15 अप्रैल 1938 को उन्हें मराठी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया।

सावरकर 20वीं शताब्दी के सबसे बड़े हिन्दुवादी रहे। विनायक दामोदर सावरकर को बचपन से ही हिन्दू शब्द से बेहद लगाव था। सावरकर को 6 बार अखिल भारतीय हिन्दू महासभा का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। 1937 में उन्हें हिन्दू महासभा का अध्यक्ष चुना गया, जिसके बाद 1938 में हिन्दू महासभा को राजनीतिक दल घोषित कर दिया गया। हिन्दू राष्ट्र की राजनीतिक विचारधारा को विकसित करने का बहुत बड़ा श्रेय

सावरकर को जाता है। उनकी इस विचारधारा के कारण आजादी के बाद की सरकारों ने उन्हें वह महत्त्व नहीं दिया जिसके वे वास्तविक हकदार थे। 15 अगस्त 1947 को उन्होंने

सावरकर सदानो में भारतीय तिरंगा एवं भगवा. दो-दो ध्वजारोहण किये।। 5 फरवरी 1948 को महात्मा गांधी की हत्या के उपरांत उन्हें प्रिवेन्टिव डिटेन्शन एक्ट धारा के अन्तर्गत

गिरफ्तार कर लिया गया।8 अक्टूबर 1949 को उन्हें पुणे विश्वविद्यालय ने डॉ।ग्लेटो की मानद उपाधि से अलंकृत किया।8 नवम्बर 1963 को इनकी पत्नी यमुनाबाई चल बसीं।

कब रुकेगा हिन्दू वंश संहार ? इस विषय पर ऑनलाइन विशेष संवाद संपन्न !

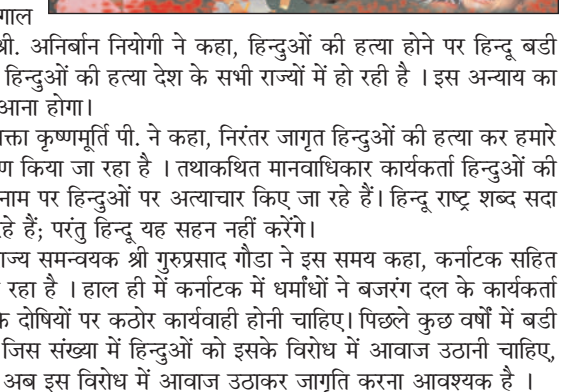
हिन्दुओं की हत्या रोकने हेतु अब हिन्दू समाज संगठनशक्ति दिखाएँ 1- श्री. प्रमोद मुतालिक, संस्थापक अध्यक्ष, श्रीराम सेना जब पूरे देश में सर्वत्र हिजाब के विषय में चर्चा चल रही है, ऐसे में बजरंग दल के कार्यकर्ता तथा राष्ट्रभक्त श्री. हर्ष नामक युवक की हिन्दू होने के कारण हत्या की गई। श्री. हर्ष की हत्या के पीछे सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया तथा पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया इन कट्टर इस्लामी संगठनों का हाथ है। इस प्रकार में यह मुसलमानों को गिरफ्तार किया गया है । श्री. हर्ष के ही समान अनेक हिन्दुओं को इस प्रकार हत्या हो रही है। इन हिन्दुओं की हत्या रोकने के लिए हिन्दू समाज को अब संगठनशक्ति दिखानी होगी, ऐसा आवाहन श्रीराम सेना के संस्थापक अध्यक्ष श्री. प्रमोद मुतालिक ने किया । वे हिन्दू जनजागृति समिति आयोजित कब रुकेगा हिन्दू वंशसंहार ? इस ऑनलाइन विशेष संवाद में बोल रहे थे।

तमिलनाडु के हिन्दू मक्कल कल्ती के अध्यक्ष श्री. अर्जुन संपत ने कहा, तमिलनाडु सहित पूरे देश में पिछले कुछ वर्षों में अनेक हिन्दू कार्यकर्ताओं को हमन खो दिया है । हिन्दुओं की हत्याओं के पीछे कार्यरत जिहादी इस्लामी संगठनों पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए । भारत में समान नागरिक कानून लागू करना आवश्यक है ।

इस संवाद में सहभागी हुए पश्चिम बंगाल के भारतीय साधक समाज के संस्थापक श्री. अनिर्बान नियोगी ने कहा, हिन्दुओं की हत्या होने पर हिन्दू बड़ी संख्या में एकत्रित नहीं होते । दिन-प्रतिदिन हिन्दुओं की हत्या देश के सभी राज्यों में हो रही है । इस अन्याय का प्रतिकार करने के लिए हिन्दुओं को आगे आना होगा ।

कर्नाटक के उच्च न्यायालय के अधिवक्ता कृष्णमूर्ति पी. ने कहा, निरंतर जागृत हिन्दुओं की हत्या कर हमारे देश में हिन्दुओं में भय का वातावरण निर्माण किया जा रहा है । तथाकथित मानवाधिकार कार्यकर्ता हिन्दुओं की हत्याओं पर मौन रहते हैं । सेकुलरिज्म के नाम पर हिन्दुओं पर अत्याचार किए जा रहे हैं। हिन्दू राष्ट्र शब्द सदा के लिए समाप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं; परंतु हिन्दू यह सहन नहीं करेंगे।

हिन्दू जनजागृति समिति के कर्नाटक राज्य समन्वयक श्री गुरुप्रसाद गौडा ने इस समय कहा, कर्नाटक सहित पूरे भारत में धर्मांध शक्तियों का प्रभाव बढ़ रहा है । हाल ही में कर्नाटक में धर्मांधों ने बजरंग दल के कार्यकर्ता श्री. हर्ष की हत्या की। श्री. हर्ष की हत्या के दोषियों पर कठोर कार्यवाही होनी चाहिए। पिछले कुछ वर्षों में बड़ी संख्या में हिन्दुओं की हत्या की गई; परंतु जिस संख्या में हिन्दुओं को इसके विरोध में आवाज उठानी चाहिए, वह आवाज नहीं उठाई गई । हिन्दुओं को अब इस विरोध में आवाज उठाकर जागृति करना आवश्यक है ।



देश में बढ़ती आत्महत्याएं, दोषी कौन ?

देश में बढ़ती आत्महत्याएं एक गंभीर चिन्ता का विषय बनता जा रहा है। आज युवा में बढ़ती कुट्टा, असहनशीलता ,और असफलता आत्महत्याओं का कारण बन रहे है।आत्महत्याओं के 2018 से जून 2020तक के आंकड़ों से चिन्ता होती जा रही है।तीन सालों में 10 हजार बेरोजगारों ने आत्महत्या कर ली। आंकड़ों के अनुसार कर्ज व दिवालियापन के कारण 2018 में 4970,और 2019 में 5908 तथा 2020 में 5213 लोगों ने मौत को गले लगाया। बेरोजगारी के कारण 2018 में 2741और 2019 में 2851 तथा 2020 में 3548 लोगों ने अपनी इहलौला समाप्त कर ली। भौतिकवादी सोच ने समाज में कई तरह के पतन पैदा किए हैं। पैसे की भूख व अतिवादी सोच ने उपहार में लोगों को एकाकी जीवन व तनाव दिया है। आज मानव जीवन में तनाव इतना अधिक बढ़ गया है कि बच्चे से लेकर बूढ़ा,शिक्षित से लेकर अशिक्षित ,छात्र से लेकर उच्च अधिकारी,किसान,गरीब से लेकर अमीर सभी तनाव से ग्रस्त है।मानसिक तनाव के कारण देश में सामूहिक आत्महत्याओं की प्रवृत्ति बेतहाशा बढ़ती जा रही है।ऐसा क्यों है।यह एक अनसुलझी पहली बनती जा रही है।दरअसल मानव की अपेक्षाएं इतनी बलवती हो गई है कि मानव रातों -रात अमीर बनने की चाहत में अवैध व अनैतिक कार्यों को अंजाम देकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर रहा है। लेकिन इतिहास साक्षी है कि दुनिया में जितने भी सफल लोग हैं संघर्षों के बाद ही उच्च मुकाम पर पहुंचे हैं। आज मानव असफल होने पर आत्महत्या कर रहा है। कहते हैं मानव जीवन बहुत ही संघर्षों के बाद

मिलता है मगर देश में जिस प्रकार युवा से लेकर बुजुर्ग तक अपनी जीवन लीलाएं समाप्त कर रहे हैं बहुत ही दुःखद है। आत्महत्या करने का एक कारण हो सकता है लेकिन जीने के हजार कारण हैं। काली से काली रात के बाद भी दिन का उजाला होना



निश्चित है। फिर जीवन से खिलवाड़ क्यों कर रहे हो। मानव जीवन एक बार मिलता है बार बार नहीं ? इन्सान को इस पर गहन चिन्तन करना होगा। आज मानव हताशा व निराशा के भंवर से मुकाबला करने के बजाए मौत ही आखिरी विकल्प दूढ़ रहा है।जबकि दुनिया में कोई भी चीज असंभव नहीं

है।हताशा के अन्धेरे में दीये बूझ रहे हैं।इन बूझते दीयों को बचाने के लिए समाज को एक रूपरेखा तैयार करनी होगी।ताकि इस भयानक प्रवृत्ति पर नियंत्रण लगे। समाज में टूटते परिवार,बेरोजगारी ,गरीबी ,व अशिक्षा, तनाव के मुख्य कारण हैं। आज के युवा कैरियर को लेकर भी परेशान हैं। मनमाफिक रोजगार न मिलने के कारण तनावग्रस्त रहते है। प्रेम में असफलता, परीक्षा में फेल होने, कर्ज न चुकाने, के कारण भी मौत को गले लगा रहा है। युवा वर्ग में यह प्रवृत्ति बड़े पैमाने पर बढ़ती जा रही है। यदि इस पर संज्ञान न लिया तो भविष्य में मुश्किलें पैदा होगी। भारत एक ऐसा देश है जहां सबसे अधिक आत्महत्याएं होती है।प्रतिदिन आत्महत्याओं की खबरें सुर्खियां बनती है।इंसान खुद तो मर जाता है लेकिन पीछे तडफने के लिए पूरा परिवार छोड़ देता है।इहजे के कारण भी आत्महत्याएं बढ़ रही है। देश के अनन्यता कहलाने वाले किसान का आत्महत्या

करने का कारण कभी सरकारी नीतियां बनती है तो कभी मौसम की बेरूखी।पिछले पन्द्रह सालों में एक लाख से भी अधिक किसान आत्महत्या कर चुके है। आज तक किसी किसान ने अकाल ,बाढ़, भूखमरी के कारण आत्महत्या तक नहीं की लेकिन सरकारी नीतियां ही इसका कारण बन रही हैं। लोगों ने अपनी जीवन लीलाएं खत्म की हैं। आत्महत्याओं के औसतन तीन से मामले प्रतिदिन घटते आते है। भारत के परिपेक्ष्य मे आत्महत्या के तरीकों में फांसी लगाना ,आग लगाना,तथा जहरीला पदार्थ भगलना,मुख्य है, देश मे घटित इन मामलों से निवृत्त की भयानक तस्वीर दिख रही है।समाजशास्त्री कहते हैं कि सामाजिक सुरक्षाबोध,पारिवारिक जुड़ाव,और तनाव से दूरी ही आत्महत्याओं पर अंकुश लगा सकती है। हताशा के गले लगा रहा है। मनमाफिक प्रयास करने होंगे। ताकि समाज से इस प्रवृत्ति को दूर किया जा सके। देश के युवाओं की नकारात्मक सोच को सकारात्मक बनाना होगा। सामाजिक परिदृश्य को बदलना हर नागरिक का कर्तव्य है।समाज के बुद्धिजीवी लोगों को इस पर मनन करना चाहिए। युवा देश के कर्णधार होते हैं जो देश की दिशा बदल सकते हैं। इन्हे दिग्भ्रमित होने से बचना जरूरी है। युवाओं का मार्गदर्शन करना होगा ताकि निराशा व हताशा से दूर रह सकें।यह देश हित व नैतिक के लिए बेहद लाजिमी है।सरकारों को भी इन घटनाओं को अनदेखा नहीं करना चाहिए। यदि अब भी इन घटनाओं के प्रति कदम न उठाये तो अनमोल जिनगियां बर्बाद होती रहेगी।

जिम है जरूरी पर बरतें सावधानियां

सर्दियों का मौसम जोर पकड़ रहा है। ऐसे मौसम में आमतौर पर शरीर में आलस्य बढ़ने लगता है। इससे कई बार हम व्यायाम के प्रति लापरवाह भी होने लगते हैं, जबकि इस मौसम में जिम में व्यायाम करना अधिक आवश्यक हो जाता है। इस मौसम में पसीना कम आता है, हम फूझी भी ज्यादा हो जाते हैं, भूख बढ़ जाती है। यही नहीं हमारी मूवमेंट पर भी फर्क पड़ता है। इन सभी से वजन भी बढ़ने लगता है। ऐसे में जिम जाने वालों के लिए उसे नजरअंदाज करना या पूरी तरह से बंद करना उचित नहीं। हां, यह और बात है कि कुछ बातों का ध्यान रख कर जिम में व्यायाम के समय वर्तमान जलवायु के दुष्प्रभावों से बचते हुए उसे नियमित रखा जा सकता है।

यह कितना जरूरी है

इवोल्यूशन फिटनेस जिम के ओनर और फिटनेस ट्रेनर मंजीत

सोलंकी बताते हैं कि कुछ लोग सर्दियां शुरू होने पर जिम में व्यायाम करना बंद कर देते हैं और जब सर्दियां खत्म होने लगती हैं, तब फिर से वर्कआउट शुरू कर देते हैं। अगर आप जिम जाते रहे हैं तो वर्कआउट पूरी तरह बंद करना बिल्कुल सही नहीं। सर्दियों में भी जिम में वर्कआउट नियमित रूप से करना चाहिए। अगर आप ज्यादा जिम नहीं जा पा रहे हैं तो भी हफ्ते में कम से कम चार दिन और करीब डेढ़ घंटे जिम में व्यायाम नियमित तौर पर करें।

अनिवार्य है व्यायाम

सर्द मौसम में कैलोरी बढ़ने लगती है और हम फेटी होने लगते हैं, इसलिए हमें अपने व्यायाम में रनिंग, वेट ट्रेनिंग और कार्डिओ शामिल करना चाहिए। खासकर कार्डिओ व्यायाम तो ज्यादा से ज्यादा करने चाहिए। रनिंग के लिए ध्यान रखना चाहिए कि शीत

ऋतु में सुबह-सुबह खुले इलाके जैसे पार्क आदि में रनिंग न करें, क्योंकि बाहर के तापमान का शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यही नहीं, दिनचर्या में भी चलने-फिरने और घूमने वाली गतिविधियां शामिल होनी चाहिए।

पहनावे के प्रति सावधानी

हम आकर्षक दिखने के लिए पार्टी आदि में तो पहनावे के प्रति सजग रहते हैं, लेकिन व्यायाम के समय नहीं। खासकर आजकल के मौसम में व्यायाम के लिए भी हमें पहनावे का ध्यान रखना चाहिए। वर्कआउट के समय हमारा शरीर गर्म हो जाता है, इसलिए उस दौरान या उससे पहले और बाद में हमारी क्लोथिंग उचित होनी चाहिए। बकौल फिटनेस ट्रेनर मंजीत सोलंकी, जिम में व्यायाम के लिए जाते समय इनलाइन से आउटलाइन तक हमें अपने कपड़ों पर ध्यान देना चाहिए। प्रोपर कपड़े पहनने चाहिए, जिससे आपको व्यायाम करने में सहूलियत हो और तापमान की वजह से शरीर को भी परेशानी न हो। यह मौसम सिर पर सबसे ज्यादा प्रभाव डालता है, इसलिए जिम आते-जाते समय सिर अच्छी तरह से ढका होना चाहिए। इसके लिए विंटर कैप का इस्तेमाल करें। इससे आप सर्दियों में होने वाली बीमारियां जैसे खांसी, जुकाम, सिर दर्द, नाक व कान दर्द आदि की परेशानियों से बच सकेंगे। अक्सर लोग कार खुले में खड़ी करके उसी में जैकेट, कोट आदि छोड़ कर जिम जाते हैं और जिम में व्यायाम करने के बाद ठंड में बाहर निकलकर अपने वही कल तक पहुंचने के बाद जैकेट आदि पहनते हैं। इससे उनके सर्दियों संबंधी रोगों की चपेट में आने का खतरा रहता है। शरीर पर अन्य तरीकों से भी बुरा असर पड़ता है। इसलिए जिम में पहुंच कर ही जैकेट आदि उतारें और व्यायाम के बाद जिम से निकलने से पहले अपनी जैकेट, कैप आदि पहन कर ही बाहर निकलें।

जिम जाने का समय

इस मौसम में जिम जाने के लिए कोई निश्चित समय नहीं है। आप अपनी सहूलियत के अनुसार जिम जा सकते हैं। जरूरी है कि आपका शरीर रिलेक्स हो। खासकर सर्दियों में पूरा आराम करने के बाद ही वर्कआउट के लिए जाएं। अक्सर समय कम होने पर हम जिम में वर्कआउट के उपरांत तुरंत बाहर निकल जाते हैं। यह आपकी सेहत को काफी क्षति पहुंचाता है। हेवी वर्कआउट के बाद थोड़ी देर आराम करने के बाद ही जिम से बाहर जाएं।

आहार के प्रति सजग रहें

जब फिट रहने की बात हो तो खान-पान का जिक्र होना मुनासिब ही है। सर्दियों में अपने आहार में सूप अधिक शामिल करें। जिम में व्यायाम करने के बाद जूस पी सकते हैं तथा प्रोटीन से भरपूर डाइट लें। अमूमन सर्दियों में ठंडी चीजें जैसे आइसक्रीम, टंडे पेय पदार्थ आदि के सेवन के लिए मना ही किया जाता है। ध्यान रखें कि जिम के तुरंत बाद ऐसे टंडे पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें। जिम में व्यायाम करने के पश्चात आपके शरीर का तापमान काफी बढ़ा हुआ होता है, इसलिए करीब एक घंटे बाद ही ठंडी चीजों का सेवन करें। ऐसा नहीं करने से आपको गले संबंधी समस्या या नजले, जुकाम आदि की शिकायत हो सकती है।



मूंगाफली हर मौसम में खास टंड का टाइम पास

मूंगाफली में सभी पोषक तत्व पाए जाते हैं। भारत में इसे गरीबों का काजू के नाम से भी जाना जाता है। भारत में सिक्की हुई मूंगाफली खाना काफी प्रचलित है, इसे टाइम पास के नाम से भी जानते हैं। जो लोग टाइम पास के नाम पर मूंगाफली का सेवन करते हैं, उनमें से अधिकतर इसके गुणों के बारे में नहीं जानते और अनजाने में ही कई पोषक तत्व ग्रहण कर लेते हैं, जो उनके शरीर के लिए काफी फायदेमंद रहते हैं। मूंगाफली में प्रोटीन, लिक्नाई और शर्करा पाई जाती है। एक अंडे के मूल्य के बराबर मूंगाफलियों में जितनी प्रोटीन व ऊष्मा होती है, उतनी दूध व अंडे से

संयुक्त रूप में भी नहीं होती। इसकी प्रोटीन दूध से मिलती-जुलती है, चिकनाई घी से मिलती है। मूंगाफली के खाने से दूध, बादाम और घी की पूर्ति हो जाती है। मूंगाफली शरीर में गर्मी पैदा करती है, इसलिए सर्दी के मौसम में ज्यादा लाभदायक है। यह खांसी में उपयोगी है व मेदे और फेफड़े को बल देती है। भोजन के बाद यदि 50 या 100 ग्राम मूंगाफली प्रतिदिन खाई जाए तो सेहत बनती है, भोजन पचता है, शरीर में खून की कमी पूरी होती है और मोटापा बढ़ता है। इसे भोजन के साथ सब्जी, खीर, खिचड़ी आदि में डालकर नित्य खाना चाहिए। मूंगाफली में तेल का अंश होने से यह वायु की बीमारियों को भी नष्ट करती है। मुद्गीभर भुनी मूंगाफलियां निश्चय ही पोषक तत्वों की दृष्टि से लाभकारी हैं। मूंगाफली में प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन के, ई, तथा बी होते हैं, ये अच्छा पोषण प्रदान करते हैं। मूंगाफली पाचन शक्ति को बढ़ाती है, रुचिकर होती है, लेकिन गरम प्रकृति के व्यक्तियों को हानिकारक भी है। मूंगाफली ज्यादा खाने से पित्त बढ़ता है अतः सावधानी रखें।

अदरक सर्दियों में गुणकारी

अदरक व सौंठ हर मौसम में, हर घर के रसोई घर में प्रायः रहते हैं। इनका उपयोग घरेलू इलाज में किया जा सकता है।

- भोजन से पहले अदरक को चिप्स की तरह बारीक कतर लें। इन चिप्स पर पिसा काला नमक बुरक कर खूब चबा-चबाकर खा लें फिर भोजन करें। इससे अपच दूर होती है, पेट हलका रहता है और भूख खुलती है।
- अदरक का एक छोटा टुकड़ा छीले बिना (छिलके सहित) आग में गर्म करके छिलका उतार दें। इसे मुँह में रख कर आहिस्ता-



आहिस्ता चबाते चूसते रहने से अन्दर जमा और रुका हुआ बलगम निकल जाता है और सर्दी-खांसी ठीक हो जाती है।

- सौंठ को पानी के साथ घिसकर इसके लेप में थोड़ा सा पुराना गुड़ और 5-6 बूंद घी मिलाकर थोड़ा गर्म कर लें। बच्चे को लगने वाले दस्त इससे ठीक हो जाते हैं। ज्यादा दस्त लग रहे हों तो इसमें जायफल घिसकर मिला लें।



हड्डियां मजबूत करता है टमाटर

लाल टमाटर को सलाद और सब्जी से लेकर फल की तरह भी खाने के उपयोग में लाया जाता है। पोषक तत्वों से भरपूर यह फल आपकी ऑस्टियोपोरोसिस जैसे रोग से बचने में सहायता कर सकता है। एक नया अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करता है कि टमाटर के ज्यूस का सेवन इस रोग से आपको दूर रख सकता है। इसका कारण है टमाटर में पाया जाने वाला एंटीऑक्सिडेंट कैरोटेनॉइड लाइकोपेन जो टमाटर को लाल रंग भी देता है। इस तरह से मजबूत हड्डियों को पाने की राह में यह बेहद आसान और बनिबस्त सस्ता रास्ता है।

एंटीबायोटिक से नहीं रुकता जुकाम

ब्रिटेन के रॉयल कॉलेज ऑफ जनरल प्रैक्टिशनर्स और वहां के स्वास्थ्य विभाग द्वारा किए गए एक ताजा अध्ययन के अनुसार सर्दी-जुकाम के मामूली संक्रमण के लिए एंटीबायोटिक जरूरी नहीं है। रनिंग नोज या कफ वाली खांसी की समस्या वायरस की वजह से होती है, जो थोड़े समय बाद अपने आप ठीक हो जाती है। एंटीबायोटिक्स से व्यक्ति के शरीर में मौजूद अरबों बैक्टीरिया और वायरस की प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि एंटीबायोटिक्स के लगातार सेवन से जहां एक ओर शरीर में मौजूद फायदेमंद जीवाणु नष्ट हो जाते हैं, वहीं नुकसानदेह वायरस पर इन दवाओं का असर कम हो जाता है। क्योंकि ये वायरस एंटीबायोटिक्स के खिलाफ लड़ने के लिए अपनी प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बना लेते हैं।



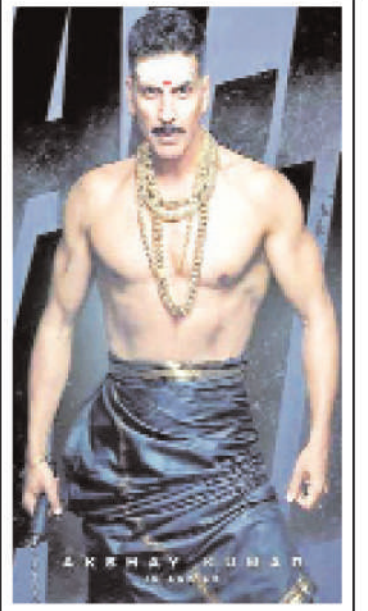
डरहम (द कन्वरसेशन)। यहाँ हमारे जहन का वह खास हिस्सा है, जो हमें बताती है कि हम कौन हैं। यह तो हम सभी जानते हैं कि जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, चीजों को याद रखना मुश्किल होता जाता है। आप अक्सर यह भूल जाते हैं कि आप एक कमरे में क्यों आए, किसी विशेष पारिवारिक कार्यक्रम के विवरण को याद न रख पाने से लेकर कुछ परिचित नामों को भूल जाने तक। चीजों को भूलना बुढ़ापे को परिभाषित करने का एक तरीका भी हो सकता है। बहुत से लोग याद रहने वाली चीजों को जब भूलने लगते हैं तो अक्सर कहते हैं, हे भगवान, बुढ़ापा आ गया है। जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं यह विस्मृति प्रदर्शित करना आसान होता है लेकिन समझना कठिन होता है। एक स्पष्ट व्याख्या यह हो सकती है कि चीजों को याद रखना मुश्किल हो जाता है क्योंकि मस्तिष्क में कुछ परिवर्तन हो रहा है जिसे सूचनाओं को संग्रहीत करना अधिक कठिन हो जाता है। लेकिन हाल ही में जर्नल ट्रेड्स इन कॉग्निटिव साइंसेज में प्रकाशित एक पेपर ने इस घटना के लिए एक वैकल्पिक स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया है कि हमारी यादें तो अच्छी रहती हैं, लेकिन उम्र बढ़ने पर वह अव्यवस्थित हो जाती हैं। सबसे पहले, यह समझना

महत्वपूर्ण है कि स्मृति गुजरते जीवन की हर बात की सटीक रिकॉर्डिंग नहीं है। सोचिए अगर आपको हर दिन के हर घंटे के हर मिनट का हर एक विवरण याद हो। यह भारी होगा, और आपके द्वारा याद की गई अधिकांश जानकारी काफी हद तक व्यर्थ होगी। यदि आप याद कर रहे हैं कि आपने आज सुबह नाश्ते में क्या खाया था, तो उससे कहीं अधिक प्रासंगिक यह याद रखना है कि आपने खिड़की से बाहर झाँकते हुए किस आकार का बादल देखा। या फिर खाने के दौरान आपने कितनी बार पलकें झपकाईं? इसके बजाय, हम अपने पर्यावरण के विभिन्न हिस्सों को अपने जहन में संजो लेते हैं। कहने का मतलब

उम्र बढ़ने से स्मृति 'अव्यवस्था'

यह है कि हम अपने अनुभव के जिस हिस्से पर अधिक ध्यान देते हैं वह हमारी स्मृति को आकार देता है। इस नए अध्ययन के लेखकों ने इस विषय पर कई सबूतों की समीक्षा की। वे सुझाव देते हैं कि यादों को संग्रहीत करने में कठिनाई के बजाय, जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, कम प्रासंगिक चीजों पर भी ध्यान देने लगते हैं, जिसका अर्थ है कि हम अपनी स्मृति में बहुत अधिक जानकारी डालने लगते हैं। यह ऐसा कुछ नहीं है जिस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है - यह सिर्फ उम्र बढ़ने का एक स्वाभाविक परिणाम लगता है।

बहुत अधिक जानकारी पर ध्यान केंद्रित करने से हमें इसे याद रखने में परेशानी क्यों होती है? इसे कुछ ऐसा सोचें कि जैसे आप हर दिन किसी काम को एक ही तरह से करते हैं, मसलन अपने दांत ब्रश करना। आपको शायद याद होगा कि आपने आज सुबह ब्रश किया था या नहीं, लेकिन क्या आप वास्तव में यह याद कर सकते हैं कि आज सुबह आपके अपने दांतों को ब्रश करने के समय और कल उन्हीं ब्रश करने के समय के बीच कितना अंतर था? या उससे एक दिन पहले? अपने दांत ब्रश करने जैसी स्थितियों को व्यक्तिगत घटनाओं के रूप में याद रखना कठिन होता है क्योंकि उनमें बहुत कुछ समान होता है। इसलिए उनसे भ्रमित होना आसान है। घटनाएं जो एक दूसरे से भिन्न होती हैं वे अधिक यादगार होती हैं। उदाहरण के लिए, यह याद रखना आसान है कि जब आप कुत्ते को टहलाने के लिए ले गए तो क्या हुआ और जब आप अलग से तैरने गए तो क्या हुआ। उनके भ्रमित होने की संभावना बहुत कम है वे एक दूसरे से एकदम अलग हैं। इसलिए, यदि वृद्ध लोग अपनी यादों में अपने अनुभवों को संजोने पर कम ध्यान केंद्रित करेंगे, तो उनकी यादें उन सूचनाओं के साथ अव्यवस्थित हो जाएंगी जो मायने नहीं रखती हैं। इस अव्यवस्था का मतलब है कि एक मेमोरी से दूसरी मेमोरी की जानकारी के साथ ओवरलैप होने की अधिक संभावना होगी। बदले में इसका मतलब है कि यादों के एक-दूसरे के साथ भ्रमित होने की अधिक संभावना होगी, जिससे यह याद रखना कठिन हो जाएगा कि क्या हुआ था।



'बच्चन पांडे' का पहला गाना 'मार खाएगा' रिलीज

मुंबई (वार्ता)। बालीवुड के खिलाड़ी कुमार अक्षय कुमार की आने वाली एक्शन-कामेडी फिल्म 'बच्चन पांडे' का पहला गाना 'मार खाएगा' रिलीज हो गया है। फिल्म 'बच्चन पांडे' में अक्षय कुमार और कृति सैनन की मुख्य भूमिका है। फिल्म 'बच्चन पांडे' का पहला गाना 'मार खाएगा' रिलीज हो गया है। इस गाने में अक्षय कुमार का रफ-टफ अंदाज नजर आ रहा है। यह गाना गणेश आचार्य द्वारा कोरियोग्राफ किया गया है। 'मार खाएगा' को बच्चन पांडे के व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए एक मेगा-कैनास पर शूट किया गया है। 'मार खाएगा' की शूटिंग एक ही दिन में 300 से अधिक डांसर्स के साथ मुंबई की फिल्मसिटी में बनाए गए एक सेट पर की गई है। अक्षय कुमार और कृति सैनन स्टार फिल्म बच्चन पांडे 18 मार्च 2022 को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। इस फिल्म का निर्देशन फरहाद सामजो ने किया है और साजिद नाडियाडवाला इस फिल्म को प्रोड्यूस कर रहे हैं। अक्षय कुमार और कृति सैनन, जैकलीन फर्नांडिस, पंकज त्रिपाठी, प्रतीक बब्बर और अभिमन्यु सिंह जैसे कलाकार मुख्य भूमिकाओं में हैं।

नए अध्ययन के लेखकों ने इस विषय पर कई सबूतों की समीक्षा की। वे सुझाव देते हैं कि यादों को संग्रहीत करने में कठिनाई के बजाय, जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, कम प्रासंगिक चीजों पर भी ध्यान देने लगते हैं, जिसका अर्थ है कि हम अपनी स्मृति में बहुत अधिक जानकारी डालने लगते हैं। यह ऐसा कुछ नहीं है जिस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है

एंड्रॉइड पर क्रोम का 'लाइट मोड' फीचर बंद करेगा गूगल

सैन फ्रांसिस्को (आईएनएस)। टेक दिग्गज गूगल अपनी आगामी क्रोम 100 रिलीज के साथ 'क्रोम लाइट मोड' सुविधा को बंद कर रही है जो एंड्रॉइड पर वर्षों से उपलब्ध है। कंपनी ने गुरुवार को इसकी घोषणा की है। रिपोर्ट 9टू5गूगल की रिपोर्ट के अनुसार, एंड्रॉइड के लिए क्रोम में लाइट मोड 'डेटा सेवर' का एक रीब्रांडेड संस्करण है, जो कई साल पहले धीमी या सीमित डेटा कनेक्शन वाले लोगों के लिए एक टूल के रूप में प्लेटफॉर्म पर शुरू हुआ था। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह निश्चित रूप से एक उपयोगी विशेषता है, लेकिन हाल के वर्षों में इसकी आवश्यकता कम हो गई है। एक सहायता पृष्ठ पोस्ट में, गूगल ने इस सप्ताह पृष्ठ की है कि क्रोम में 'लाइट मोड' वी।100 अपडेट के साथ बंद हो जाएगा, जो कि 29 मार्च को जारी होने वाला है। गूगल के हवाले से कहा गया था, 29 मार्च,

2022 को, स्थिर चैनल के लिए क्रोम एम।100 की रिलीज के साथ, हम लाइट मोड को बंद कर देंगे, एंड्रॉइड के लिए एक क्रोम फीचर जिसे हमने 2014 में क्रोम डेटा सेवर के रूप में पेश किया था ताकि लोगों को अपने फोन पर कम मोबाइल डेटा का उपयोग करने में मदद मिल सके और वेब पेजों को तेजी से लोड करें। गूगलने समझाया कि सुविधा को बंद करने का कारण सेलुलर डेटा योजनाओं के लिए लागत में कमी है, साथ ही क्रोम ने डेटा उपयोग में अन्य सुधार किए हैं। हाल के वर्षों में हमने कई देशों में मोबाइल डेटा की लागत में कमी देखी है, और डेटा उपयोग को और कम करने और वेब पेज लोडिंग को बेहतर बनाने के लिए हमने क्रोम में कई सुधार किए हैं। हालांकि लाइट मोड बंद हो रहा है। मोबाइल पर तेजी से वेबपेज लोड करने का अनुभव प्रदान कर सकता है।

25 फरवरी को रिलीज होगी माधुरी दीक्षित की वेब सीरीज



द फेम गेम

मुंबई (वार्ता)। बालीवुड अभिनेत्री माधुरी दीक्षित की वेब सीरीज 'द फेम गेम' 25 फरवरी को रिलीज होगी। माधुरी दीक्षित इन दिनों अपनी पहली वेब सीरीज 'द फेम गेम' के प्रमोशन में व्यस्त हैं। इस वेबसीरीज में माधुरी, संजय कपूर के साथ नजर आएंगी। वहीं मानव कौल भी इस सीरीज का हिस्सा है। वेब सीरीज की रिलीज डेट याद दिलाते हुए माधुरी दीक्षित ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर किया है, जिसमें वह रेट्रो अंदाज में डांस करती दिख रही हैं। यह वेब सीरीज 25 फरवरी को नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने जा रही है। माधुरी ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम एकाउंट से एक वीडियो शेयर किया, जिसमें वह मानव कौल के साथ 'अच्छा जी मैं हारी चलो मान जाओ ना' गाने पर डांस कर रही हैं। वीडियो को शेयर करते हुए माधुरी ने लिखा, 'द फेम गेम, 25 फरवरी को रिलीज हो रही है, रिमाइंडर सेट करना है, मान जाओ ना'।



फिल्म 'लव हॉस्टल' के रिव्यू के दौरान अभिनेता विक्रांत मेसी व अभिनेत्री सायना मल्होत्रा।

'स्पाई बहू' में परिष्कृत महिला की भूमिका निभा रहीं परिणीता

मुंबई (आईएनएस)। टीवी शो 'गुला ब्रदर्स' में गंगा की भूमिका निभाने वाली अभिनेत्री परिणीता बोरटाकुर अब आगामी शो 'स्पाई बहू' की कास्ट में शामिल हो गई हैं। यह शो एक जासूस और एक सदिश आतंकवादी के बीच प्रेम कहानी के इर्दगिर्द घूमता है, जिसे सना सैय्यद और सेहबान अजीम हैं। वह कहती हैं कि मैं टीवी स्क्रीन पर वापस लौटने के लिए वास्तव में बहुत उत्साहित हूँ। शो में मेरी भूमिका बहुत शक्तिशाली है और उन भूमिकाओं से अलग है जो मैंने पहले पद पर निभाई थी। अपने आखिरी शो के आफ एयर जाने के बाद मैं एक छोटे से ब्रेक पर थी। मैं अपने व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित कर रही थी, और अपने बेटे और परिवार को कुछ समय दे रही थी। परिणीता अपनी भूमिका के बारे में बताती हैं और कहती हैं कि मैं वीरा का किरदार निभा रही हूँ, जो एक बहुत ही परिष्कृत और कलात्मक व्यक्ति है। मैं यौहन की सौतेली मां हूँ। मेरा किरदार कहानी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। 'स्पाई बहू' का प्रोमो हाल ही में बालीवुड दिवा करीना कपूर खान के साथ प्रसारित हुआ। शो में अन्य खान, शोभा खोटे, भावना बलसावर भी हैं।

प्रिंस नरूला, युविका चौधरी का म्यूजिक वीडियो 'जिंदगी' रिलीज

मुंबई (आईएनएस)। सेलिब्रिटी जोड़ी प्रिंस नरूला और युविका चौधरी एक नया संगीत वीडियो 'जिंदगी' लेकर आए हैं, इस गाने को अफसाना खान ने गाया है। अफसाना ने कहा कि 'जिंदगी' एक ऐसा गाना है जो दर्शकों को खूब पसंद आएगा। इस गाने में जो भावनाएं दिखाई गई हैं, वे बहुत ही शानदार हैं। गीत वीन राइडा द्वारा लिखा गया है और शोबी सरवन द्वारा रचित है। युविका ने कहा, 'जिंदगी' के लिए शूट करना मेरे लिए एक असली अनुभव था। अफसाना की आवाज में यह गाना बहुत अच्छा लग रहा है। हमने इसकी शूटिंग में बहुत अच्छा समय बिताया। मैं प्रशंसकों की प्रतिक्रिया को देखने के लिए बहुत उत्साहित हूँ। वीडियो टाइम्स म्यूजिक द्वारा निर्मित है, जिसे वृहस्पतिवार को जारी किया गया है और यह टाइम्स म्यूजिक यूट्यूब चैनल और सभी आडियो ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है।



वलिमें का हिस्सा बनकर रोमांचित है हुमा कुरैशी

मुंबई (वार्ता)। बालीवुड अभिनेत्री हुमा कुरैशी का कहना है कि वह फिल्म वलिमें का हिस्सा बनकर बेहद रोमांचित है। हुमा इन दिनों अपनी फिल्म वलिमें के प्रमोशन में व्यस्त हैं। इस फिल्म में हुमा दक्षिण भारतीय स्टार अजित के साथ नजर आने वाली हैं। फिल्म वलिमें में हुमा कुरैशी पुलिस अधिकारी के रूप में जबरदस्त एक्शन करती हुई दिखाई देंगी। फिल्म के बारे में बातचीत करते हुए हुमा ने कहा कि, मैं इस फिल्म का हिस्सा बनकर बहुत रोमांचित हूँ क्योंकि मैं इस साल की सबसे बड़ी एक्शन फिल्म का हिस्सा हूँ और सच कहूँ तो इस बात को लेकर बहुत खुश हूँ। हुमा जल्द ही संजय लीला भासली के निर्देशन में बनी फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म में आलिया भट्ट मुख्य गंगूबाई के किरदार निभा रही हैं। फिल्म में अजय देवगन भी विशेष किरदार में दिखाई देंगे। यह फिल्म 24 फरवरी, 2022 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

साजिद ने कपिल शर्मा अभिनीत फिल्म की घोषणा की

मुंबई (आईएनएस)। जानेमाने फिल्म निर्देशक और निर्माता साजिद नाडियाडवाला ने खुलासा किया है कि वह जल्द ही कामेडियन कपिल शर्मा अभिनीत एक फिल्म की घोषणा करेंगे। वह इस सप्ताह के अंत में 'द कपिल शर्मा शो' में अपनी पत्नी वर्दा खान के साथ 'नाडियाडवाला स्पेशल' एपिसोड के लिए विशेष अतिथि के रूप में आ रहे हैं। उनके साथ बालीवुड अभिनेता टाइगर श्राफ, कृति सेनन और अहान शेट्टी भी शामिल होंगे। यह विशेष एपिसोड नाडियाडवाला ग्रैंडसन एंटरटेनमेंट के 67 साल पुराने सफर को टूटवूट देगा। होस्ट कपिल शर्मा ने साजिद नाडियाडवाला से पूछा कि वह शो में कैसा महसूस कर रहे हैं और उन्होंने जवाब दिया कि मैं इस शो को अपने जैसा मानता हूँ क्योंकि मैंने ही इंडस्ट्री में अर्चना पूरन सिंह की सिफारिश की थी। नवजोत सिंह सिद्धू को प्रसन्न शायी करोगी में कमेंटेटर रोल के लिए, उसके बाद सुमोना चक्रवर्ती, और कृष्ण अभिषेक, और सुदेश लहरी। उन्होंने कहा कि भूलना नहीं चाहिए, मैं अब उस स्टार का निर्माता भी हूँ जो इस शो के निर्माता उर्फ सलमान खान हैं। साजिद ने आगे शो पर एक घोषणा की कि वह अपनी अगली फिल्म के लिए होस्ट कपिल शर्मा के लिए एक स्क्रिप्ट तैयार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैं अब यह भी घोषणा करना चाहूँगा कि हम कपिल के लिए भी एक स्क्रिप्ट बनाने की प्रक्रिया में हैं और आगे दो महीनों में विवरण खबर साझा करेंगे।

दिव्येंदु ने 'द रेलवे मेन' की शूटिंग पर बात की

मुंबई (आईएनएस)। अभिनेता दिव्येंदु ने पहली वेब श्रृंखला 'द रेलवे मेन' के फिल्मांकन के दौरान अपनी कठिन रात की शूटिंग के बारे में खुलासा किया, जो भोपाल गैस त्रासदी पर आधारित है। दर्ज अनुमानों के अनुसार इस त्रासदी में 15,000 से अधिक लोगों मारे गए थे, और 600,000 से अधिक श्रमिक प्रभावित हुए थे। अपने कठिन शूटिंग शेड्यूल के बारे में बात करते हुए दिव्येंदु ने साझा किया कि मैं ज्यादातर रात की शूटिंग कर रहा हूँ क्योंकि यह शो भोपाल गैस त्रासदी पर आधारित है। मैंने पिछले पूरे महीने रात की शूटिंग की है। मैं निरस्तदेह कह सकता हूँ कि यह मेरे जीवन का अब तक का सबसे कठिन शूट है। दिव्येंदु 'प्यार का पंचनामा', 'टायलेट एक प्रेम कथा', 'बती गुल मीटर चालू' और प्राहम वीडियो श्रृंखला 'मिजापुर' में अपनी भूमिकाओं के लिए जाने जाते हैं। आर माधवन, के के मेनन और बाबिल शाह जैसे कलाकारों के साथ काम करने के बारे में उन्होंने कहा, यह निश्चित रूप से इसके लायक है क्योंकि एक अभिनेता के रूप में, इस तरह की महत्वपूर्ण कहानी का हिस्सा बनना और होना एक संतोषजनक एहसास है। दिव्येंदु की फिल्म 'भरे देश को धरती' भी जल्द ही रिलीज होने वाली है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, वह इमियाज अली के प्रोजेक्ट का भी हिस्सा होंगे।



हैदराबाद : पवन कल्याण व राणा दग्गुबाती-स्टारर 'भीमला नायक' की भव्य रिलीज से पहले फोटो शूट कराते कलाकार।

आंध्र प्रदेश सरकार ने 'भीमला नायक' को लेकर थिएटर मालिकों को दी चेतावनी, पुराने दामों पर बेचे टिकट

हैदराबाद (आईएनएस)। पवन कल्याण और राणा दग्गुबाती-स्टारर 'भीमला नायक' की भव्य रिलीज से पहले, आंध्र प्रदेश सरकार ने थिएटर मालिकों को टिकट की कीमतों के संबंध में नियमों का पालन करने की चेतावनी देते हुए नोटिस जारी किया। चिरंजीवी के विशेष अनुरोध के बाद भी आंध्र प्रदेश सरकार फिल्म टिकट की कीमतों को लेकर अडिग रही है। चूँकि नया सरकारी आदेश आना बाकी है, इसलिए भीमला नायक के टिकट पुराने दामों पर बेचे जाएंगे, जिससे थिएटर मालिकों, खरीदारों और व्यापार में शामिल व्यापारियों को भारी नुकसान हो सकता है। साथ ही, सरकार ने थिएटर मालिकों को चेतावनी देते हुए सख्त आदेश जारी किए हैं, इसलिए फिल्म के बेनिफिट शो या विशेष स्क्रीनिंग की अनुमति नहीं दी जा रही है। थिएटर मालिकों, व्यापारियों और वितरकों के लिए फिल्म में निवेश किए गए पैसे की वसूली के लिए मौजूदा टिकट की कीमतें किसी भी तरह से वैध नहीं हैं। कोई लाभ नहीं होता नहीं दिख रहा है और कम से कम कीमतों के परिणामस्वरूप कई थिएटर फिल्म की स्क्रीनिंग नहीं कर रहे हैं। चर्चा है कि वॉइसआरसीपी के लोगों ने जानबूझकर नए सरकारी आदेश की शुरुआत को टाल दिया है।

मुसलमानों से वोटिंग का अधिकार छीन लेना चाहिए : हरि भूषण ठाकुर

पटना। बिहार में भाजपा के विधायक हरि भूषण ठाकुर ने विवादित बयान देते हुए कहा है कि मुसलमानों से वोटिंग का अधिकार छीन लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि मुसलमानों को 1947 में दूसरा देश मिल चुका है, वह पाकिस्तान चले जाएं। ठाकुर ने कहा कि यहां रहेंगे तो दूसरे दर्जे के का नागरिक बनकर रहना होगा। बीजेपी विधायक ने मुसलमानों को मानवता का दुश्मन तक बता डाला और कहा कि वह पूरी दुनिया को इस्लामिक स्टेट बना चाहते हैं। भूषण ने यह बयान बजट सत्र से ठीक एक दिन पहले दिया, ऐसे में विधानसभा में इस पर हंगामा हो सकता है। विधानसभा परिसर में गुरुवार को पत्रकारों ने ठाकुर से एआईएमआईएम विधायकों की ओर से जनसंख्या के आधार पर भागीदारी की मांग को लेकर सवाल किया तो विधायक ने कहा, मेरा कहना है कि 1947 में देश का विभाजन हुआ, धर्म के नाम पर। उन्हें दूसरा देश मिल गया, दूसरे देश में चले जाएं। अगर यहां रह रहे हैं तो

में सरकार से मांग करता हूँ कि उनके वोटिंग राइट को खत्म कर दिया जाए। वह दूसरे स्तर के नागरिक बनकर भारत में रह सकते हैं।

ठाकुर ने आगे कहा, "बिल्कुल अजेंडा



है, आईएसआई का अजेंडा है, इस्लामिक स्टेट बनाने का अजेंडा है, अफगानिस्तान में क्या कर रहे हैं, पाकिस्तान को देखिए, ये मानवता के दुश्मन है। वोटिंग राइट जरूर छीन लिया जाए। वे अल्पसंख्यक नहीं हैं। यह शब्द भारत के संविधान के साथ मजाक है, क्योंकि प्रस्तावना में लिखा है कि हम

भारत के लोग, फिर अल्पसंख्यक कौन, बहुसंख्यक कौन।" एआईएमआईएम विधायकों की ओर से राष्ट्र गीत का विरोध किए जाने को लेकर उन्होंने कहा, "जो नहीं गाएंगे, यह विधानसभा अध्यक्ष के निर्णय को कोई नहीं मानता है तो उनकी सदस्यता को रद्द कर देना चाहिए। राष्ट्रगीत में क्या है,

जल की वंदना है, भूमि की वंदना है, वृक्ष की वंदना है, पुष्प की वंदना है, यदि नहीं करेंगे तो पानी नहीं पिएं। उन लोगों का अजेंडा है। हमारा देश है तो हम अपना अजेंडा नहीं चलाएंगे। उनको तो देश दे दिया गया है। उनका अजेंडा है संपूर्ण विश्व को इस्लामिक स्टेट बनाना।"

भ्रष्टाचार के आरोपी डिप्टी जेलर कुलदीप हुड़ा ने जहर खाकर दी जान

गुरुग्राम। गुरुग्राम में डिप्टी जेल सुपरिंटेंडेंट ने जहर खाकर सुसाइड कर लिया है। 45 साल के डिप्टी जेल सुपरिंटेंडेंट कुलदीप हुड़ा नारनौल जेल में तैनात थे। उन्होंने विषाक्त निगल लिया। इससे उनकी मौत हो गई। कुछ समय पहले विजिलेंस ने डिप्टी जेल सुपरिंटेंडेंट कुलदीप हुड़ा के खिलाफ भ्रष्टाचार का मामला दर्ज किया था। बोते दिन इस केस में हाईकोर्ट से उनकी बेल एप्लीकेशन रिजेक्ट हो गई थी। कुलदीप हुड़ा ने जहर निगल लिया था। इसके बाद आननफानन में उन्हें अस्पताल ले जाया गया। जहां एमजीटी मेडिकल यूनिवर्सिटी में इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक विजिलेंस ने जेल में छापा मारा था। इस दौरान जेल वॉर्डन को रिश्तत लेते हुए पकड़ा था। इस केस में दो जेल वॉर्डन गिरफ्तार हो चुके हैं। इसी केस में डिप्टी जेलर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया था। इस केस में उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ था।

हम हर जरूरतमंद को दे रहे सुविधा, सपा का विकास कब्रिस्तान की बाउंड्री वाल बनवाना : सीएम योगी

अयोध्या। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव बाकी बचे तरफों के लिए चुनाव प्रचार में सभी दलों ने पूरी ताकत झोंक दी है। इसी कड़ी में गुरुवार शाम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या में रोड शो किया। इस दौरान जनसैलाब उमड़ पड़ा। लोग मोदी-योगी के नारे लगा रहे थे। रोड शो के दौरान इतनी भीड़ थी एक शुरू हुआ। 2023 के अंत में जब रामलला विराजमान होंगे तो पूरी दुनिया कहेगी यह है हमारी

अयोध्या। हम लोग रामराज्य की संकल्पना को साकार करने जा रहे हैं। यह काम सपा और बसपा कभी नहीं कर पाती। उन्होंने कहा कि हमने 500 वर्ष का इंतजार खत्म



करवाया है तो अयोध्या की पांच सीटों पर भाजपा को जिताना है। अयोध्या के रूदौली और गोसाइंगंज में जनसभा को संबोधित करते हुए योगी ने कहा कि अयोध्या सुंदर नगरी बनने जा रही है। अयोध्या में अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट और मेडिकल कॉलेज बन रहा है। उन्होंने कहा कि पहले प्रदेश में सिर्फ सैफई महोत्सव

होता था। आज अयोध्या में दीपोत्सव, मथुरा में रंगोत्सव, काशी की देव दीपावली और प्रयागराज में भव्य और दिव्य कुंभ के आयोजन से देश-दुनिया में छा जाता है। उन्होंने कहा कि हम हर जरूरतमंद को सुविधा दे रहे हैं। सपा का विकास कब्रिस्तान की बाउंड्री वाल बनवाना था। गरीब के योजनाओं का पैसा इत्र वाला मित्र डकार जाता था। इसीलिए सरकार का बुलडोजर सड़क भी बनाता है और माफियाओं को दुर्गा पूजा में जुलूस को रोक दिया जाता था। दंगा हो जाता था। अब यूपी पूरी तरह दंगामुक्त हो गया है।

बलभद्र महायज्ञ के बाद लगेगी परिक्रमा यज्ञ परिक्रमा से मिलती है सुख और शांति

हाथरस। बलभद्र महायज्ञ की तैयारियों को लेकर व्यवस्थापक समिति की एक बैठक डिब्बा गली स्थित पं. उपेंद्रनाथ चतुर्वेदी ज्योतिष कार्यालय पर हुई। जिसमें कुंड मंडप निर्माण व सामग्री संकलन आदि पर विचार रखे गए। बैठक की अध्यक्षता करते हुए यज्ञाध्यक्ष उपेंद्रनाथ ने कहा कि यज्ञ स्थल पर यजमान और श्रद्धालुओं के बैठने की व्यवस्था उत्तम होनी चाहिए। वहीं हवन कुंडों परिक्रामार्थ भी उचित व्यवस्था होनी चाहिए। क्योंकि हवन-यज्ञ में आहुतियों के बाद परिक्रमा का विशेष महत्व होता है। यज्ञ कुंडों की परिक्रमा से सकारात्मक ऊर्जा आती है। साथ ही संपन्नता व सकारात्मक सोच का मानव शरीर में उद्भव होता है। इस मौके पर 4 मार्च को निकलने वाली कलश यात्रा को लेकर चर्चा हुई। साथ ही कलश यात्रा का रूट व अन्य व्यवस्थाओं को लेकर जिम्मेदारियां

सौंपी गईं। इस मौके पर कार्यक्रम को लेकर पुनः जानकारी देते हुए बताया कि 3 मार्च को मध्याह्न 11 बजे से सर्व प्रयत्न के साथ होगा। 4 मार्च को भव्य कलश यात्रा। 5 मार्च शनिवार से सुबह नौ बजे से नित्यांचन व मध्याह्न 2 बजे से हवन-यज्ञ में आहुतियां दी जायेंगी। जबकि 9 मार्च को साढ़े 5 बजे अस्ति पुषांजलि तक होगी और 10 मार्च को सायं 4 बजे यज्ञ में पूर्ण आहुति दी जायेगी। जबकि 11 मार्च को भगवान श्री बलभद्र व माता रेवती के श्रृंगार आरती रंशन और प्रसादी विरण होगा। इस मौके पर यज्ञाचार्य उपेंद्रनाथ चतुर्वेदी, मनु महाराज, सेवायत पुजारी गोवर्धनाथ चतुर्वेदी, पवन चतुर्वेदी, प्रबल चतुर्वेदी, प्रवीण चतुर्वेदी, शरद अग्रवाल, राजेंद्र वाण्य, मदनगोपाल वाण्य, किशन शर्मा, शरद अग्रवाल, हरिओम मुसदी, राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी, श्याम अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

अमेठी में फिर राहुल गांधी और स्मृति ईरानी की टक्कर चुनावी दंगल में डिंपल यादव की भी एंट्री

अमेठी। यूपी विधानसभा चुनाव 2022 के लिए चौथे चरण का मतदान बुधवार को हो गया। पांचवें चरण के लिए आज शाम प्रचार थम जाएगा। चुनाव प्रचार के अंतिम दिन आज अमेठी एक बार फिर राहुल गांधी और स्मृति ईरानी आमने-सामने होंगे। इसी के साथ चुनावी दंगल में डिंपल यादव की भी एंट्री होगी। समाजवादी पार्टी की ओर से जारी स्टार प्रचारकों की पहली लिस्ट में ही पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पत्नी और कन्नौज की पूर्व सांसद डिंपल यादव और राज्यसभा सदस्य जया बच्चन का नाम शामिल किया गया था। दोनों आज (25 फरवरी को) कौशांबी और 26 फरवरी को जौनपुर में जनसभा को संबोधित करेंगी। इसके पहले डिंपल यादव ने लखनऊ में रोड शो किया। डिंपल और जया बच्चन शुक्रवार की सुबह 11.30 बजे प्रयागराज पहुंचीं। वहां से कौशांबी के सिराथू, मंझनपुर और

चायल विधानसभा क्षेत्र में जाएंगी। 26 फरवरी को दोनों जौनपुर पहुंचेंगी। वहां मड़ियाहू और मछलीशहर में उनका कार्यक्रम है।

उधर, केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी अमेठी में डेरा डाले हुए हैं। कल वह प्रधानमंत्री मोदी की जनसभा में मौजूद रहीं। इस मौके पर उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी पर तंज कसते हुए कहा कि वे चुनावी जीव हैं। स्मृति ने कहा कि मौत हमारे सिर पर मंडरा रही थी तब भी हमने अमेठी की सेवा की। कोरोना के दौरान हमने एक एक गांव जाकर मारक और सैनटाइजर बांटे। जो लोग सिर्फ चुनावी जीव हैं, उनका काम है वोट मांगना। हमारा काम है सेवा करना। यूपी में चार चरणों का मतदान बीत जाने के बाद अब कांग्रेस नेता राहुल गांधी की एंट्री होने जा रही है। वह शुक्रवार को अमेठी के जगदीशपुर में चुनावी रैली करेंगे। 2017 के

चुनाव में अमेठी संसदीय क्षेत्र की पांच में से चार सीटें भाजपा ने जीती थीं जबकि एक सीट पर सपा ने कब्जा जमा लिया था। दशकों तक गांधी परिवार का सबसे मजबूत गढ़ रहे अमेठी में इस बार का चुनाव बीजेपी और कांग्रेस दोनों के लिए चुनौतीपूर्ण माना जा रहा है।

उधर, समाजवादी पार्टी की ओर से जया बच्चन और डिंपल यादव को अब उतारने की वजह यह मानी जा रही है कि पिछले चार चरणों में बूथों पर आधी आवादी ने जमकर मतदान किया है। कहा जा रहा है कि उन रूझानों को देखते हुए सपा ने अपने स्टार प्रचारकों की लिस्ट में शामिल डिंपल यादव और जया बच्चन को भी अब चुनाव मैदान में प्रचार के लिए उतारने का निर्णय लिया है। दोनों अपने अभियान की शुरूआत आज सिराथू से करने जा रही हैं जहां से डिप्टी सीएम केशव मौर्य चुनाव लड़ रहे हैं।

अखिलेश यादव ने 11 मार्च का लंदन का टिकट कटाया, समर्थक परेशान

लखनऊ। सोशल मीडिया पर मैन देखा कि अखिलेश यादव ने 11 मार्च को लंदन जाने का टिकट ले लिया है और उनके समर्थक परेशान हैं कि वे राज्य छोड़कर जा रहे हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ ने सपा नेता पर हमला बोलते हुए यह बात कही है। उन्होंने कहा कि अब तक 4 चरणों का चुनाव हो चुका है और इसमें 80 बनाम 20 का ट्रेड देखने को मिला है। उन्होंने कहा कि अब तक हुए चरणों में 80 फीसदी सीटें भाजपा को मिलती दिख रही हैं, जबकि 20 फीसदी सीटों पर अन्य दलों को संतोष करना पड़ेगा। किसान आंदोलन के पश्चिम यूपी में घिरने के सवाल पर उन्होंने कहा कि मीडिया का अपना विश्लेषण है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मीडिया को यहां का जमीनी विश्लेषण मालूम नहीं है। यह उनको ही पता होता है, जो जमीन पर काम कर रहे

होते हैं। योगी ने कहा कि मीडिया तो 2019 में सपा और बसपा के गठबंधन के बाद हमें 25 लोकसभा सीटें ही दे रहा था, लेकिन सब गलत साबित हुए। भाजपा को 80 फीसदी से ज्यादा सीटें मिली थीं। उन्होंने सरकार के खिलाफ माहौल होने की बात से इनकार किया और कहा कि यहां तो प्रो-इनकम्बेसी है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि बीते 25 सालों में पहली बार ऐसा हो रहा है, जब सत्ता में रह चुकी पार्टी के खिलाफ कोई माहौल नहीं है। हिजाब विवाद के बीच खुद भगवा ड्रेस में रहने के सवाल पर भी सीएम योगी ने जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि विधानसभा में कोई ड्रेस कोड नहीं होता है। लड़कियां अपने घरों में, बाजार में या फिर छुट्टी के दौरान हिजाब पहन सकती हैं।

योगी सरकार की तारीफ कर राजा भैया ने अखिलेश यादव को दिया

जवाब जवा होगी जमानत नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश में पांचवें चरण की वोटिंग से पहले निर्दलीय विधायक और जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के प्रमुख रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया ने योगी सरकार के कामकाज की तारीफ की है। उन्होंने योगी सरकार के कामकाज को पिछली सरकारों से बेहतर बताया है। समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव की ओर से कुंडा में प्रचार और राजा भैया पर निशाना साधे जाने के बाद रघुराज प्रताप सिंह ने कहा कि एक बार फिर उनके विरोधियों की जमानत जब्त हो जाएगी। राजा भैया ने कहा कि सड़क, बिजली आदि के मामले में मौजूदा सरकार ने पिछली सरकारों से बेहतर काम किया है। राजा भैया ने कहा, "जहां तक सड़कों के निर्माण, बिजली कनेक्शन देने और नहर की खुदाई आदि की बात है, योगी सरकार ने पिछली सरकारों से बेहतर काम किया है।" करीब दो दशक बाद समाजवादी पार्टी ने राजा भैया के खिलाफ उम्मीदवार उतारा है।

योगी के मठ गुरु गोरक्षनाथ पहुंचे छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल, की पूजा-अर्चना

गोरखपुर। यूपी विधानसभा के बाकी बचे चरणों के लिए चुनाव प्रचार तेज हो गया है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल गुरुवार शाम को गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ मंदिर पहुंचे। यहाँ उन्होंने बाबा गोरक्षनाथ का विधिवत पूजन-अर्चना किया और यूपी में कांग्रेस की प्रचंड जीत की कामना की। थोड़ी देर बाद सीएम भूपेश सिंह बघेल ने एक ट्वीट भी किया। इस ट्वीट में उन्होंने लिखा- समरसता और भाईचारे की भारतीय परंपरा और संस्कृति के ध्वजवाहक रहे गोरखपीठ में आज पूजा अर्चना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भगवान गोरखनाथ से देश भर में सुख समृद्धि की कामना की।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंदिर के पीठाधीश्वर हैं। इससे पहले सीएम भूपेश बघेल ने गोरखपुर ग्रामीण विधानसभा के संदुली-बेंदुली क्षेत्र में सभा के दौरान भाजपा पर जमकर निशाना साधा



था। सभा में उन्होंने छुट्टा पशुओं और किसानों के मुद्दे पर योगी सरकार पर जमकर हमला बोला था। उन्होंने कहा कि तीन चरण के चुनाव तक पीएम मोदी से लेकर सीएम योगी तक जाति-धर्म पर ही बात कर रहे थे। लेकिन मुद्दा

मजबूती से उठा तो अब पीएम भी छुट्टा पशुओं की समस्या पर बोलने लगे हैं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार ने पहले ही पशुधन को लेकर योजना बना दी है। वहां के नागरिकों के लिए पशुधन समस्या नहीं कमाई का जरिया है। मालूम हो कि उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के चार चरण का मतदान हो चुका है। पांचवें चरण का मतदान 27 फरवरी को कराया जाएगा। इस चरण में कुल 61 सीटों पर मतदान होगा। अबतक चार चरणों में प्रदेश की 403 सदस्यों वाली विधानसभा की 231 सीटों पर मतदान हो चुका है। अगले तीन चरणों में बची हुई 172 सीटों पर मतदान कराया जाएगा।

विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव ने महिला बैरक का किया तर्जुअल निरीक्षण

मऊ। गुरुवार को जिला कारागार के महिला बैरक का तर्जुअल निरीक्षण वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव कुंचर मित्रेश सिंह कुशवाहा द्वारा पूछताछ के दौरान जेलर/प्रभारी अधीक्षक द्वारा बताया गया कि जिला कारागार में 559 पुरुष, 20 महिला एवं 26 किशोर निरुद्ध हैं। 20 महिला बन्दिनों में 01 कन्विकटेड तथा 19 विचाराधीन बन्दी हैं। इन महिला बन्दिनों के साथ दो लड़के एवं 02 लड़किया रह रही हैं। जेल अधीक्षक द्वारा बताया गया कि बच्चों को बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग से पुष्टाहार आता है। महिला बैरक के तर्जुअल निरीक्षण में पूछ ताछ के दौरान जेलर/प्रभारी अधीक्षक द्वारा बताया गया कि आज बन्दिनों को भोजन में प्रातः नाश्ता में-चाय, गुड़, पावरोटी, सुबह भोजन में-रोटी, चावल, अरहर की दाल, आलू पालक की सब्जी एवं शाम भोजन में-रोटी, चावल, चना की दाल एवं आलू गोभी की सब्जी मीनू के अनुसार दिया जायेगा। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा महिला बन्दिनों से जेल के अन्दर उनकी समस्याओं के बारे में पूछ ताछ किया गया, जिसमें से महिला बन्दी परमदेव्या ने बताया कि उसके दामाद का निधन हो गया



है, इसके दो छोटे छोटे लड़के एवं एक लड़की हैं, बहुत दिक्कत हो रही है। यह 20 जुलाई 2021 से धारा 304 में निरुद्ध हैं। इनके केस की पैरवी इनके प्राइवेट अधिवक्ता कर रहे हैं। महिला बन्दी रिंकी निषाद ने बताया कि वह 17 जनवरी 2020 से जिला कारागार में धारा 302 के अन्तर्गत निरुद्ध हैं, इनके केस में गवाही हो गयी है, परन्तु उसका निराकरण नहीं हुआ है। इन दोनों महिला बन्दिनों को विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव द्वारा सलाह/सुझाव दिया गया कि अपने अपने केस की पैरवी प्रभावी ढंग से सम्बंधित न्यायालय में करें, जिससे आपके प्रकरण का गुण दोष के आधार पर निराकरण हो सके और आपको न्याय मिल सके। इसके साथ ही

साथ सचिव द्वारा यह भी बताया गया कि जहां कहीं भी विधिक सहायता की आवश्यकता हो वहां जेल अधीक्षक के माध्यम से कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में प्रार्थना पत्र प्रेषित करें। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव कुंचर मित्रेश सिंह कुशवाहा के पहल पर जिला कारागार में महिला बन्दिनों से बास की उलिया बनाने का कार्य शुरू किया गया है। महिला बन्दिनों के उलिया बनाने से जहां एक ओर महिला बन्दिनों के अंदर उत्साह एवं जागरूकता पैदा होगी, वहीं उलिया से हुई बिक्री से हुई आय से उन्हें लाभ भी प्राप्त होगा। सचिव द्वारा जेलर/प्रभारी अधीक्षक को 26 फरवरी को आयोजित होने वाली जेल

ई-लोक अदालत के सम्बंध में निर्देशित किया गया एवं प्लो बार्गेनिंग के सम्बंध में जानकारी प्रदान की गयी। निरीक्षण के समय नागेश सिंह जेलर/प्रभारी अधीक्षक, अमर कुमार सिंह, उप जेलर एवं मंजू बर्नवाल उप जेलर उपस्थित थी।

पिकअप की वोट में आने से बालिका की मौत

भीरा (आजमगढ़)। बरदह थाना क्षेत्र के राजपुर पसिका स्थित प्राथमिक स्कूल के समीप गुरुवार की दोपहर अनियंत्रित पिकअप की चपेट में आने से मासूम बालिका की मौत हो गई। मौत की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजवा दिया। गांव की काजल (8) पुत्र आलमगौर दोपहर में गांव से गुजर रहे प्रयागराज-गोरखपुर हाईवे को पार कर रही थी। उसी दौरान तेज गति से आ रही पिकअप की चपेट में आकर गंभीर रूप से घायल हो गईं। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय लोगों की भीड़ जुट गई। उधर मौका मिलते ही पिकअप चालक पिकअप लेकर फरार हो गया। चालक बालिका को लींग आनन-फानन सीएचसी ले गए, जहां डाक्टर ने मृत घोषित कर दिया।

डीएम और एसपी ने जिला कारागार का किया निरीक्षण



मऊ। गुरुवार को जिलाधिकारी अरुण कुमार और पुलिस अधीक्षक सुशील चड्ढा द्वारा जिला कारागार का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने विभिन्न बैरकों में जाकर बैरकों की स्थिति का जायजा लिया, साथ ही कुछ कैदियों से बातचीत कर उनका हालचाल लिया। बैरक परिसर में स्थित रसोईघर एवं अस्पताल का भी जिलाधिकारी द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान रसोई घर में बन रहे भोजन के बारे में जानकारी

ली गई। जिलाधिकारी ने रसोई घर की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने एवं कैदियों को मेंन्यू के अनुसार गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी द्वारा परिसर में स्थित अस्पताल के डॉक्टर द्वारा अस्पताल में भर्ती मरीजों की संख्या एवं उनके स्वास्थ्य के बारे में भी जानकारी ली गयी। निरीक्षण के दौरान जेल की बाहरी दीवारों के निकट स्थित कुछ पेड़ों को देखते हुए जिलाधिकारी ने इसे तत्काल कटवाने के निर्देश दिए।

जेल में बंद कैदियों के कोविड-19 टीकाकरण की स्थिति के बारे में भी जिलाधिकारी ने जानकारी ली। जेल में लगे विभिन्न सीसीटीवी कैमरों के मॉनिटरिंग हेतु जेल अधीक्षक के परिसर में स्थित अस्पताल के कमरे में कंट्रोल रूम होने की स्थिति को देखते हुए जिलाधिकारी ने तत्काल कंट्रोल सिस्टम को जेल अधीक्षक के कमरे में लगवाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर जेल अधीक्षक एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप



क्रिकेट रूढ़िवादी पंत बने डी2एच के ब्रांड दूत नई दिल्ली। स्टार क्रिकेटर रूढ़िवादी पंत को गुरुवार को डी2एच का नया ब्रांड दूत चुना गया। डी2एच डिश टीवी का सीधा प्रसारण सेटलाइट सेवा प्रदाता है। पंत अगले दो वर्षों तक डी2एच के 360 डिग्री 'ब्रांड कम्यूनिकेशन' में दिखायी देंगे। इस भागीदारी के बारे में बात करते हुए पंत ने कहा, 'डी2एच एक बहुत बड़ा डीटीएच ब्रांड है। डी2एच के साथ जुड़ना शानदार है और मैं टीम के साथ इसे ऊंचाईयों तक ले जाने के लिये काम करने को तैयार हूँ।'

तेंदुलकर कसिनो पर करेंगे कानूनी कार्रवाई मुंबई। दिग्गज क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने गुरुवार को कहा कि वह सोशल मीडिया पर प्रचार के लिए उनकी बदली तस्वीरों का इस्तेमाल करने वाले एक कसिनो के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करेंगे।

पता चला है कि गोवा के एक कसिनो 'बिग डैडी' ने प्रचार के लिए तेंदुलकर की तस्वीरों का उपयोग किया। तेंदुलकर ने अपने डिजिटल पंज पर लिखा, 'मेरी कानूनी टीम जरूरी कार्रवाई कर रही होगी, लेकिन मुझे लगा कि यह जानकारी सभी के साथ साझा करना महत्वपूर्ण है। यह मेरे संज्ञान में आया है कि सोशल मीडिया पर कई विज्ञापन दिखाए जा रहे हैं, जिसमें बदली हुई तस्वीर के साथ मुझे एक कसिनो का समर्थन करते हुए दिखाया गया है।'

विराट का शतक, फिर भी झारखंड 251 रन पर डेर



गुवाहाटी। नवदीप सैनी की वापसी पर की गई शानदार गेंदबाजी तथा स्पिनरों के कमाल से दिल्ली ने रणजी ट्रॉफी फाइनल गुरुवार के मैच में गुरुवार को यहां कप्तान विराट सिंह के शतक के बावजूद झारखंड को 251 रन पर आउट कर दिया। दिल्ली की शुरुआत भी अच्छी नहीं रही और उसने तमिलनाडु के खिलाफ मैच की दोनों पारियों में शतक जड़ने वाले युवा बल्लेबाज यश धूल (पांच) का विकेट जल्दी गंवा दिया। पहले दिन का खेल समाप्त होने के समय दिल्ली ने एक विकेट पर 28 रन बनाए थे। तब ध्रुव शोरे 15 और हिमंत सिंह छह रन पर खेल रहे थे।

एशियाई कप क्वालीफायर भारत ग्रुप डी में शामिल नई दिल्ली। भारतीय फुटबॉल टीम को इस साल जून में कोलकाता में खेले जाने वाले एएफसी एशियाई कप 2023 के फाइनल दौर के क्वालीफायर के लिए गुरुवार को डाले गये ड्रा में ग्रुप डी में हांगकांग, अफगानिस्तान और कंबोडिया के साथ रखा गया।

अधिकारिक ड्रा समारोह कुआलालुमुपुर स्थित एशियाई फुटबॉल परिषद (एएफसी) के मुख्यालय में आयोजित किया गया। भारत आठ जून को कंबोडिया से खेलेगा जिसके बाद उसे 11 जून को अफगानिस्तान और फिर 14 जून को हांगकांग के खिलाफ खेलेगा है। सभी मैच कोलकाता के साल्ट लेक स्टेडियम में खेले जाएंगे।

महान विकेटकीपर मार्श को दिल का दौरा पड़ा मेलबर्न। आस्ट्रेलिया के अपने जमाने के दिग्गज विकेटकीपर रॉडनी मार्श को गुरुवार को दिल का दौरा पड़ने के बाद क्वींसलैंड अस्पताल में भर्ती कराया गया और उनकी हालत गंभीर है। मार्श क्वींसलैंड में बुडबर्ग में एक चैरिटी कार्यक्रम के लिये जा रहे थे, रास्ते में उन्हें दिल का दौरा पड़ गया। 74 वर्षीय मार्श को बुल्स मार्टर्स चैरिटी कार्यक्रम के आयोजकों द्वारा अस्पताल ले जाया गया।

क्रिकेट : पहले विकेट के लिए रोहित और ईशान ने जोड़े 71 गेंदों पर 111 रन

भारत की टी20 में लगातार 10वीं जीत, श्रीलंका को 62 रन से हराया, ईशान-श्रेयस के अर्धशतक

एजेसी ►► लखनऊ भारत ने गुरुवार को यहां पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में श्रीलंका को 62 रन से शिकस्त देकर तीन मैचों की श्रृंखला में वेस्टइंडीज के खिलाफ पिछली सफेद गेंद की श्रृंखला में सफूपा साफ करने के बाद आत्मविश्वास से आत प्रोत भारतीय टीम ने इस श्रृंखला में भी सकारात्मक शुरुआत की। यह भारत की टी20 अंतरराष्ट्रीय में लगातार 10वीं जीत है। भारत ने पाकिस्तान के लगातार 9 जीत के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ा है। वर्ल्ड रिकॉर्ड अफगानिस्तान (12 जीत) के नाम है। टीम ने ईशान किशन (89) और श्रेयस अय्यर (57*) की पारियों से दो विकेट पर 199 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया। कप्तान रोहित शर्मा ने 44 रन बनाए। श्रीलंका की टीम चरित्र असालंका (नाबाद 53 रन) के अर्धशतक के बावजूद 20 ओवर में छह विकेट पर 137 रन रन ही बना सकी।

ईशान किशन

प्लेयर	ऑफ	ट मैच
89	रन	
56	गेंद	
10	चौके	
03	छक्के	

हुड़ा 97वें टी20 प्लेयर दीपक हुड़ा का ये पहला टी-20 इंटरनेशनल मैच है। टीम इंडिया के लिए टी-20 डेब्यू करने वाले वह 97वें प्लेयर बने। हुड़ा को कैप्टन रोहित ने टी-20 कैप सौंपी। उनके अलावा प्लेइंग-इलेवन में जसप्रीत बुमराह, रवींद्र जडेजा और संजू सैनसन की वापसी हुई।

रोहित बने टी-20 के सरताज

रोहित (3306 रन) अपनी पारी में 37वां रन बनाने के साथ ही टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बन गए। उन्होंने न्यूजीलैंड के मार्टिन गुप्टिल (3299) का रिकॉर्ड तोड़ा। इस मैच से पहले रोहित गुप्टिल और विराट कोहली (3296) के बाद तीसरे स्थान पर थे। अब वे नंबर-1 बन गए हैं।

स्कोर बोर्ड

आवर	रन	गेट	4	6
श्रीलंका ने गुरुवार सुबह	44	32	2	1
ईशान किशन ने विकेट	89	56	10	3
श्रेयस अय्यर	57	28	5	2
रविंद्र जडेजा	03	04	0	0

मिताली, मंधाना और हरमनप्रीत के अर्धशतक वलीन स्वीप से बची भारतीय महिला टीम



वलीन स्वीप। भारत ने गुरुवार को अंतिम महिला वनडे क्रिकेट मैच में न्यूजीलैंड को छह विकेट से हराकर इस दौर में अपनी पहली जीत दर्ज की। पिछले मैचों में अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाने वाले भारतीय गेंदबाजों ने भी आखिर में अच्छा प्रदर्शन किया तथा न्यूजीलैंड को लिग्गारि 50 ओवरों में नौ विकेट पर 251 रन ही बनाते हुए। न्यूजीलैंड ने सीरीज पर 4-1 से कब्जा किया। न्यूजीलैंड की तरफ से

स्कोर बोर्ड

वलीन स्वीप	रन	गेट	4	6
मिताली राजू	17	25	3	0
हरमनप्रीत कौर	34	41	2	1
मंधाना	66	75	6	0
वलीन स्वीप	12	21	1	0
इशान किशन	30	37	1	2
मार्श	15	17	1	0
न्यूजीलैंड ने गुरुवार	30	33	4	0
मिताली राजू	15	33	1	0
हरमनप्रीत कौर	13	12	0	1
वलीन स्वीप	07	06	1	0

मेदवेदेव खिताब से 3 जीत दूर नडाल भी क्वार्टर फाइनल में



एजेसी ►► अकापुल्को दानिल मेदवेदेव और राफेल नडाल ने बुधवार को यहां आसान जीत के साथ मैक्सिको ओपन टेनिस टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। मेदवेदेव ने पाब्लो एंड्रुजर पर 6-1, 6-2 से हराकर एटीपी रैंकिंग में शीर्ष पर काबिज होने की तरफ भी मजबूत कदम बढ़ाए। नडाल ने स्टीफन कोजलोव को 6-0, 6-3 से पराजित किया। अगर मेदवेदेव क्वार्टर फाइनल में योशियोका निशिओका और नडाल टॉमी पॉल को हरा देते हैं तो दोनों खिलाड़ी सेमीफाइनल में आमने सामने होंगे। नडाल ने आस्ट्रेलियाई ओपन के फाइनल में पांच सेट तक चले मुकाबले में मेदवेदेव को हराया था। मेदवेदेव ने पिछले साल सितंबर में यूएस ओपन के रूप में अपना पहला ग्रैंडस्लैम खिताब जीता था। अकापुल्को में खिताब जीतने पर 26 वर्षीय मेदवेदेव विश्व रैंकिंग में नंबर एक पर काबिज होने की तरफ भी मजबूत कदम बढ़ाए। नडाल ने स्टीफन कोजलोव को 6-0, 6-3 से पराजित किया। अगर मेदवेदेव क्वार्टर फाइनल में योशियोका निशिओका और नडाल टॉमी पॉल को हरा देते हैं तो दोनों खिलाड़ी सेमीफाइनल में आमने सामने होंगे।

अंपायर की कुर्सी पर जेवरे ने मारा रैकेट, टूर्नामेंट से बाहर



इस बीच नौजुल वैपियन अलेक्सैंडर जेवरे को युगल मैच गंवावे के बाद गुरुवार को युगल रैकेट अंपायर की कुर्सी पर मारने के कारण टूर्नामेंट से बाहर कर दिया गया है। अन्य मैचों में स्टेफानोस सिसिपास ने जेजे ब्रुक को 6-1, 6-0 से हराया। उनकी सामना अब मार्कोस गिरेल से होगा जिन्होंने पाब्लो कारेनो ब्रुटा को 6-7 (7) 6-4 7-6 (4) से पराजित किया। कैमरून जोरी ने जॉन इस्कर को 6-7 (2), 6-3, 6-4 से शिकस्त दी।

मयंक का पंजाब का कप्तान बनना तय

नई दिल्ली। भारतीय इलेक्ट्रॉनिक प्रीमियर लीग (आईपीएल) में पंजाब किंग्स का कप्तान बनना तय है। भारतीय टेस्ट टीम के सदस्य अजयल उज को खिलाड़ियों में शामिल थे जिन्होंने पंजाब किंग्स ने इस मैच में शुरू में हुड़ा कोलामी से पहले अपनी टीम में खड़ा रखा था। दूसरे खिलाड़ी तेज गेंदबाज अश्विनी सिंह थे। कप्तान को लेकर औपचारिक घोषणा जल्द किए जाने की संभावना है। आईपीएल के सूत्रों ने बताया, 'पूरी संभावना है कि मयंक टीम की अगुवाई करेंगे। इस बारे में इस सप्ताह के आखिर में घोषणा की जाएगी।'

जीत का जश्न...



वॉल्वरहैम्टन। इंग्लैंड की लीह विलियमसन टीम के साथियों के साथ मोलिनैक्स स्टेडियम, वॉल्वरहैम्टन, इंग्लैंड में बुधवार को अर्नोल्ड क्लार्क कप जीतने के बाद ट्राफी के साथ जश्न मनाई।

आईपीएल 26 मार्च से शुरू होगा 40 फीसदी दर्शकों को मिलेगी एंट्री

एजेसी ►► नई दिल्ली दस टीमों की इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मुंबई में 26 मार्च से शुरू होगी और 29 मई को समाप्त होगी जिसमें टूर्नामेंट की शुरुआत में करीब 40 प्रतिशत दर्शकों को अनुमति दी जाएगी। आईपीएल चैरमैन वृजेश पटेल ने गुरुवार को संचालन परिषद की बैठक के बाद कहा, 'आईपीएल शनिवार 26 मार्च से शुरू होगा।' इस बार दो नई टीमों लखनऊ सुपरगायंट्स और गुजरात टाइटन्स को शामिल किया गया है तो



मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम और ब्रेबोर्न स्टेडियम के साथ नवी मुंबई के डीवाई पाटिल मैदान और पुणे के गाहुजे स्टेडियम में 74 मैच खेले जाएंगे। एक सूत्र ने कहा, 'दर्शकों को महाराष्ट्र सरकार द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अनुसार अनुमति दी जाएगी और शुरुआत में यह 40 प्रतिशत होगी। अगर कोविड-19 हालात काबू में रहते हैं और मामलों में कमी आती है तो टूर्नामेंट के अंत में दर्शकों की संख्या शत प्रतिशत की जा सकती है।' प्ले-ऑफ के संबंध में कोई फैसला नहीं किया गया है लेकिन पूरी संभावना है कि फाइनल की मेजबानी अहमदाबाद का नरेंद्र मोदी स्टेडियम करेगा।

दर्शकों के बीच खेला जाएगा फाइनल मैच

नई दिल्ली। इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) के 2021-22 सत्र का 20 मार्च को गोवा में जब फाइनल खेला जाएगा तो पिछले दो साल में पहली बार इस फुटबॉल प्रतियोगिता के मैच में दर्शकों की उपस्थिति देखने को मिलेगी। फाइनल नडाल के पीजेएल स्टेडियम में खेला जाएगा जिससे पिछले साल नवंबर में शुरू हुई इस फुटबॉल लीग का समापन भी होगा। राज्य सरकार के 23 जनवरी को जारी दिशानिर्देशों के अनुसार स्टेडियम की क्षमता के 50 प्रतिशत दर्शकों को ही अनुमति दी जाएगी जिसका मतलब है कि फाइनल में लगभग 9,500 दर्शक ही उपस्थित रहेंगे।

ग्रुप मैच कोलकाता में खेलेगा गोकुलम केरल

कुआलालुमुपुर। एशियाई फुटबॉल परिषद (एएफसी) ने गुरुवार को घोषणा की है कि 2022 के कैंडीकृत ग्रुप डी दक्षिण क्षेत्र के मैचों को मेजबानी कोलकाता करेगा जिसमें भारतीय क्लब गोकुलम केरल एफसी भी हिस्सा लेगा। गोकुलम केरल एफसी के अलावा ग्रुप डी में बांग्लादेश का हसुंधरा किंग्स एफसी, मालदीव का माजिया स्पोर्ट्स एंड रिक्रिएशन क्लब और प्रारंभिक और प्ले-ऑफ चरण में भाग लेने वाली छह टीमों में कितनी रहने वाली टीम शामिल है।

टी20 की घोषणा की, वनडे से हटाए गए और टेस्ट कप्तानी को कहा अलविदा

वर्कलोड की वजह से छोड़ी आरसीबी की कप्तानी

एजेसी ►► मुंबई इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2021 के बाद रॉयल चैलेंजर्स बंगलोर (आरसीबी) की कप्तानी छोड़ने वाले विराट कोहली ने कहा कि उन्होंने स्वयं के लिए कुछ समय निकालने और कार्यभार प्रबंधन के कारण यह फैसला किया। कोहली ने पहले कहा था कि टी20 विश्व कप सबसे छोटे प्रारूप में भारत के कप्तान के रूप में उनका आखिरी टूर्नामेंट होगा। इसके बाद उन्होंने आईपीएल की कप्तानी छोड़ने की भी घोषणा कर दी थी। इसके बाद उन्हें वनडे टीम की कप्तानी से हटा दिया गया और फिर उन्होंने टेस्ट टीम की कप्तानी भी छोड़ दी थी। कोहली ने आरसीबी की कप्तानी



कर सकता हूँ, लेकिन अगर मैं प्रक्रिया का आनंद नहीं ले रहा हूँ तो फिर मैं वह काम नहीं करूंगा।' पूर्व भारतीय कप्तान ने कहा कि लोगों के लिए यह समझना बहुत मुश्किल होता है कि जब कोई क्रिकेटर इस तरह का फैसला करता है तो वह क्या सोच रहा होता है। अपना 100वां टेस्ट खेलने की तैयारी में लगे कोहली ने कहा, 'लोग जब तक आपकी स्थिति में न हों उनके लिए आपको फैसले को समझना बहुत मुश्किल होता है। लोगों की अपनी अपेक्षाएं होती हैं। वे कहते हैं ओह यह कैसे हुआ, हम हैरान हैं। इसमें हैरान होने जैसी कोई बात नहीं है। मैं लोगों को समझाता हूँ कि मुझे अपने लिए भी कुछ समय चाहिए और मैं कार्यभार प्रबंधन चाहता था और बात वहीं पर खत्म हो जाती है।'

सरल तरीके से जीवन जीने का आदी

आरसीबी शुरू से लेकर अभी तक कभी आईपीएल का खिताब नहीं जीत पाया। कोहली ने कप्तानी छोड़ने के अपने फैसले को लेकर चले आ रहे चर्चाओं को विराम देते हुए कहा, 'वास्तव में ऐसा कुछ नहीं था। मैं अपनी जिंदगी को बहुत सरल तरीके से जीता हूँ। जब मुझे निर्णय लेने होते हैं तो निर्णय लेता हूँ और उनकी घोषणा कर देता हूँ।'

स्ट्रेंजा मुक्केबाजी: निकहत और नीतू सेमीफाइनल में



एजेसी ►► नई दिल्ली पूर्व जूनियर विश्व चैंपियन निकहत जरीन (52 किग्रा) और नीतू (48 किग्रा) ने बुल्गारिया के सोफिया में चल रहे 73वें स्ट्रेंजा मेमोरियल टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया जबकि दो अन्य भारतीय मुक्केबाजों को अपने शुरुआती दौर के मुकाबलों में हार का सामना करना पड़ा। निकहत ने इंग्लैंड की चार्ले डेविसन को 5-0 से शिकस्त दी। नीतू ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए इसी अंतर

दिव्यांगजन मतदाता जागरूकता रैली को डीएम ने हरी झण्डी दिखाकर किया खाना



प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। विकास भवन परिसर से शुक्रवार को दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग एवं समर्पण संस्था के तत्वावधान में 7 मार्च को जनपद में होने वाले चुनाव के मद्देनजर दिव्यांगजन मतदाता जागरूकता रैली निकाली गयी। रैली को जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह द्वारा हरी झण्डी

दिखाकर खाना किया गया। दिव्यांगजन मतदाता रैली विकास भवन से पीरनगर, कचहरी, महुआबाग होते हुए गांधी पार्क आमघाट में जाकर समापन हुआ। समापन से पहले उपजिला निर्वाचन अधिकारी अरुण कुमार, जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी

नरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, जिला समाज कल्याण अधिकारी, रामनगरीना यादव, मानवाधिकार प्रदेश उपाध्यक्ष मदन मोहन सिंह, प्रदेश सचिव अमित कुमार अग्रहरि, समर्पण संस्था की फाउंडर सविता सिंह एवं संस्था के प्रधानाध्यक्ष अमरनाथ यादव सहित अन्य लोगों के उपस्थिति में शपथ ग्रहण समारोह

का आयोजन किया गया। जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा समस्त दिव्यांगजनों एवं वहाँ उपस्थित सभी अधिकारी को मतदाता जागरूकता शपथ दिलाई गयी। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक रामबदन सिंह द्वारा पर्याप्त सुरक्षा बल उपलब्ध करायी गयी ताकि यात्रायात नियमों का उल्लंघन न हो सके।

विधायक ने वकीलों से किया जनसम्पर्क, मांगा समर्थन

प्रखर पिंडरा वाराणसी। ज्यो ज्यो तिथियां चुनाव की नजदीक आ रही है चुनाव का प्रचार भी जोर पकड़ने लगा है। उसी क्रम शुक्रवार को विधायक पिंडरा व

भाजपा विधि विभाग के काशी क्षेत्र के सहसंयोजक व एडवोकेट कौशल मिश्र कौशलेंद्र, पिंडरा बार एसोसिएशन अध्यक्ष मनोज शुक्ला, पूर्व अध्यक्ष सुभाष चन्द्र दुबे,



भाजपा प्रत्याशी डॉ अवधेश सिंह ने पिंडरा तहसील में अधिवक्ताओं से से जन सम्पर्क कर उनसे समर्थन की अपील की। इसके पूर्व तहसील पहुंचने पर विधायक का माला पहनाकर स्वागत किया। इस

अशोक पांडेय, विजय शर्मा, विजय कुमार पांडे, प्रितराज माथुर, राजेश पटेल, कमलकांत राय, श्याम शंकर सिंह, सुधीर सिंह समेत दर्जनों अधिवक्तागण उपस्थित रहे।

विवाद से नाराज युवती ने शीशा पीसकर पी लिया

बलरामपुर (आजमगढ़)। कंधरापुर थाना क्षेत्र के असाधर पट्टी गांव में गुरुवार की सुबह आपसी विवाद से नाराज युवती ने शीशा पीसकर पी लिया। हालत बिगड़ते देख स्वजन ने आनन-फानन जिला अस्पताल में भर्ती कराया, जहां आपातकालीन कक्ष में तैनात डाक्टर अजहर सिद्दीकी ने हालत गंभीर देखते हुए हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया। साथ आए लोगों ने बताया कि नीलम (18) पुत्री राधेश्याम निषाद सुबह अपने होने वाले पति से फोन से बात कर रही थी। बात करते-करते गुस्से में आ गई। उसके बाद नीलम घर के अंदर गई और वहां रखे प्यूज बल्ब को पीसकर पी लिया।

बढ़ता दिखा जन सैलाब भाजपा विधायक ने जन चौपाल लगाकर गिनाई उपलब्धियां

प्रखर मिजामुर्दा वाराणसी। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर सभी पार्टियां दमखम के साथ अपने प्रत्याशियों को मैदान में उतार चुकी है उसी कड़ी में सेवापुरी विधानसभा 391 से भाजपा, अपना दल यस, और निषाद पार्टी के संयुक्त प्रत्याशी नील रतन पटेल भी जनसभाएं कर अपने कार्यों व सड़कों के जाल, अपराध मुक्त उत्तर प्रदेश को बता कर लोगों के बीच वोट मांग रहे हैं। शुक्रवार के दिन ग्राम सभा ठठरा में ग्राम प्रधान सुनील कुमार बिंद के यहां चौपाल लगाया गया नहीं ग्रामसभा गुडियां बिहणा, डोमैला व अन्य ग्राम

सभा में लोगों के बीच जाकर सरकार की उपलब्धियों को गिनाया उन्होंने बताया कि सेवापुरी में सड़कों निर्माण व इलेक्ट्रिक बस संचालन आदि चीजें सारी भाजपा सरकार की उपलब्धियां हैं। प्रत्याशी ने बताया कि विधायक बनने के बाद शेष बचे हुए कार्यों को जल्द से जल्द पूरा किया जाएगा। जन चौपाल में अरविंद्र उपाध्याय श्याम बहादुर दुबे, नगेन्द्र तिवारी सुनील बिंद, बेचू दुबे, राधेश्याम दुबे दिनेश दुबे सुशील जायसवाल यतीश बिंद संतराम बिंद गते बिंद विजय कुमार बिंद घनश्याम दुबे रविंद्र उपाध्याय आशीष विजयकर्मा झल्लर, झपू अवस्थी व अन्य सभी सम्मानित ग्रामवासियों के साथ सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

का जाल बिछ गया है, आईटीआई कॉलेज, डिग्री कॉलेज, नए थाने का

प्रथम पुण्यतिथि पर शहीद गणेश यादव को दी गई श्रद्धांजलि

रतनपुर, मऊ। विकासखंड के चकरा निवासी शहीद गणेश यादव जो पिछले वर्ष इसी फरवरी माह में देश की सीमा की रक्षा करते हुए शहीद हुए थे। वृहस्पतिवार को उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर शहीद के घर के बगल में स्थित हनुमान मंदिर परिसर में एक बड़े मेले का आयोजन किया गया। जिसमें अपनी माटी के लाल की शहादत को नमन करने के लिए अगल बगल के दर्जनों गांव से हजारों की संख्या में लोग एकत्र हुए और भारत मां की सेवा में अपनी जान की बाजी लगाने वाले शहीद गणेश यादव की श्रद्धांजलि अर्पित किया। इस दौरान आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता में क्षेत्र के अगल-बगल के तमाम गांवों के नौजवानों ने कबड्डी की प्रतियोगिता

में दांव आजमाए। ज्ञातव्य हो कि शहादत के अगले दिन जब शहीद की शवायात्रा निकली थी। उस दिन उपस्थित तत्कालीन वन मंत्री से यहां के लोगों ने शहीद की याद में एक स्टेडियम बनवाने की मांग किया था। जिससे क्षेत्रीय युवाओं को अपनी प्रतिभा ताराणे का मौका मिल सके। किंतु उनकी यह मांग अभी तक मूर्त रूप नहीं ले सकी है। जिसका मलाल युवाओं एवं सभी आमजन को है। वहीं शहीद की शहादत को नमन करने के लिए पहरे से शहीद गणेश यादव तक सड़क को शहीद मांग का नाम तो दे दिया गया किंतु कहीं महीनों बाद शुरू हुए सड़क निर्माण की कच्चीपतित से हो रही प्रगति ने भी क्षेत्रीय लोगों को दुखी कर रखा है।

दूसरे दिन भी यूक्रेन हमले से सहमा रहा गरिमा का परिवार

सुरक्षित वतन वापसी के लिए कर रहा है पूजा पाठ

प्रखर खेतासराय (जौनपुर)। यूक्रेन पर रूस द्वारा दूसरे दिन भी हमले से डेनिप्रो शहर में फंसी गरिमा पांडेय का परिवार घर में पूजा पाठ करके सलामती की दुआ कर रहा है। शुक्रवार को पुनः यूक्रेन के कैम्पिटल कीव पर मिसाइलों के बारिश से परिवार सहमा हुआ है। बिेटी ने भी बताया कि यहाँ की सरकार ने किसी हमले के आशंकित से घरों में रहने की हिदायत दी गयी है। खेतासराय थाना

फोर्थ ईयर की छात्रा है, शुरू से ही मेधावी होने के नाते परिवार ने 2018 में उक्त यूनिवर्सिटी में दाखिला करा दिया। बीते साल



क्षेत्र के शाहपुर निवासी गजेन्द्र पांडेय की 25 वर्षीय बेटी गरिमा पांडेय यूक्रेन के डेनिप्रो यूनिवर्सिटी में एमबीबीएस की

जुलाई में महिमा आई थी, पुनः 14 अक्टूबर को वापिस चली गई। यूक्रेन की भयावह परचवी से परिवार खोफजदा हो गया। बिेटी

सायरन बजते है बनकर में छिपने की दी गई है हिदायत : गरिमा पांडेय

खेतासराय (जौनपुर)। डेनिप्रो शहर में फंसी एमबीबीएस की छात्रा गरिमा पांडेय ने दूरभाष पर मीडिया को बताया कि हमला की आशंका को देखते हुए एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ एलर्ट घोषित किया गया है, सायरन बजते ही बनकर में इंट्री करने की हिदायत दी गई है। रूस की तरफ से युद्ध की बीच साइबर अटैक भी ही गया है। एटीएम स्वाइप नहीं हो रहा है। एटीएम में सिर्फ 500 यूक्रेन ही निकल पाता है। दो से तीन दिन का राशन स्टोर कर पाई हूँ। हॉस्टल में 80 लोग है उन्हें हिदायत दी गई है, सायरन बजते ही बंकर में छिप जाए। हॉस्टल में प्येसी ने भी चेता दिया है कि जरूरी डाकुमेंट के साथ पासपोर्ट अपने पास रखे। जिस से देश छोड़ने में आसानी हो, अगले आदेश का इंतजार करने का हिदायत दी गई है। मिसाइल की आवाज सुनकर हम सब दहशत में है।

को देश लाने के लिए 60000 भी भेज दिया। यूक्रेन में 35000 भी मिल गए। तीन मार्च को ओडेसा वाया दोहा कतर होते हुए दिल्ली वापसी का टिकट भी मिल गया था। यूक्रेन पर लगातार हमले से सरकार ने ज्यादातर एयरपोर्ट बन्द कर दिए जिस से परिवार को चिंता की लकीर बढ़ गई। पल पल की खबर के लिए जहाँ परिवार टीवी पर चिपका हुआ है। वही घर

मिलावटी शराब की बरामदगी में आठ दुकानें निलंबित

आजमगढ़। जहरीली शराब से हुई मौत के बाद प्रशासन की तंद्र टूटी है। सरकारी ठेकों पर छापेमारी में मिलावटी शराब की बरामदगी होने पर आठ दुकानों के लाइसेंस को निलंबित कर दिया गया है। जानकारी के मुताबिक कार्रवाई के दायरे में तीन दुकानें माहुल क्षेत्र की तो आठ जनपद के अन्य क्षेत्रों की आई हैं। बेगुनाहों की मौत के बाद हुई किरकिरी के बाद इलाहाबाद से आबकारी की इंटीलीजेंस टीम तो गोरखपुर से ज्वाइंट कमिश्नर ने आजमगढ़ में डेरा डाला था। इनके द्वारा छापेमारी के लिए आठ टीमों का गठन किया था। छापामार कार्रवाई हुई तो आशंकाएं सच निकली। माहुल की तीन दुकानों के अलावा गोसाईं की बाजार स्थित बीयर की दुकान, जौनपुर स्थित अंग्रेजी दुकान के अलावा रोडवेज, पिपरी व बूढनपुर की देशी शराब दुकान पर मिलावट का खेल सामने आया था। जिलाधिकारी अमृत त्रिपाठी के पास यह रिपोर्ट आई तो उन्होंने सभी आठ दुकानों के लाइसेंस को एक साथ निलंबित कर दिया।

अब मेडिकल स्टोर पर सीसीटीवी कैमरा अनिवार्य

आजमगढ़। जिले में मेडिकल स्टोरों पर सीसीटीवी कैमरा लगाना अनिवार्य हो गया है। इसके लिए शासन ने निर्देश जारी कर दिया है। इससे समय-समय पर जिले की दवा दुकानों पर पहुंचकर औषधि निरीक्षक सीसीटीवी फुटेज की जांच कर सकेंगे। अगर बिना डाक्टर के पर्चे के दवाएं देते कोई मेडिकल स्टोर संचालक पाया गया तो उसके विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। इसके माध्यम से नशीली दवाओं की बिक्री पर भी नजर रखी जाएगी। जिले में 975 दवा की फुटेज दुकानें हैं। इसमें लगभग 35 फीसद दुकानों में सीसीटीवी कैमरा लग चुका है। सहायक आयुक्त औषधि मनु शंकर ने बताया कि राज्य बाल संरक्षण



आयोग की सिफारिश पर बच्चों को नशे से दूर रखने के लिए सरकार ने यह आदेश जारी किया है। बताया कि फुटेज दवा विक्रेताओं के यहां सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। उन्होंने सभी मेडिकल स्टोर संचालकों को तत्काल लगाने का निर्देश दिया है।

निरीक्षण के समय किसी दवा विक्रेता की दुकान पर सीसीटीवी कैमरे नहीं जाएं गए तो उनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी। समय-समय पर दुकानों का निरीक्षण करने के साथ ही सीसीटीवी कैमरे की फुटेज की भी जांच की जाएगी।

चोरी की ट्रैक्टर ट्राली के साथ चार गिरफ्तार

आजमगढ़। कंधरापुर थाने की पुलिस ने गुरुवार की सुबह जहानगंज थाना क्षेत्र के बरहतिर जगदीशपुर गांव से चोरी की ट्रैक्टर ट्राली के साथ चार लोगों को गिरफ्तार किया है। आरोपित चोरी की ट्राली को नए तरीके से पीट करके प्रयोग कर रहे थे। कंधरापुर थाना क्षेत्र के देवखरी गांव निवासी संजय चौहान ने घर के सामने से ट्रैक्टर की ट्राली चोरी का मुकदमा चार फरवरी को दर्ज कराया था। उपनिरीक्षक उदयराज यादव भंवरनाथ में वॉलेंटों की गिरफ्तारी की योजना बना रहे थे कि उसी बीच मुखबिर् से सूचना मिली कि बरहतिर जगदीशपुर के देवीलाल यादव अपने गांव के बाहर द्यूबवेल के पास चोरी की ट्राली छिपाकर रखे हैं। इस सूचना पर पुलिस टीम ने द्यूबवेल से छिपाकर रखी गई ट्रैक्टर ट्राली को बरामद कर लिया। इस मामले में देवीलाल यादव निवासी बरहतिर जगदीशपुर के अलावा पंकज यादव निवासी बजहड़ा (चिकनपुर) थाना मुबारकपुर, अरुण उर्फ पंकज कुमार निवासी बहरीर थाना मुबारकपुर व आलोक यादव निवासी अमुंडी थाना मुबारकपुर को गिरफ्तार कर लिया।

प्रेक्षक ने माहुल पहुंच पीड़ित परिवारों का जाना हाल



माहुल (आजमगढ़)। फूलपुर पर्वद विधान सभा के चुनाव प्रेक्षक नितिन पाटिल गुरुवार को माहुल इलाके का दौरा किए। उन्होंने जहरीली शराब पीकर मरने वालों के स्वजन से उनके घर-घर पहुंच घटना के बारे में जानकारी ली। उन्हें सांत्वना देते हुए कहा कि मातृ शक्ति अगर चाह ले तो क्षेत्र में शराब से मुक्ति मिल सकती है। पिछले चार दिन से माहुल और आसपास के गांवों में जहरीली शराब का कहर बरप रहा है। इसके सेवन से माहुल करबे सहित आसपास के गांवों के आधा दर्जन से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। कई काल के गाल में जा समाए तो बड़ी संख्या में लोग बीमार पड़े थे। विधान सभा चुनाव में इसके प्रभाव की आशंका को देखते हुए यहां पहुंचे चुनाव पर्यवेक्षक सबसे पहले वार्ड नंबर पांच के मृत रामकरन के घर पहुंचे। उनके इकलौते पुत्र रमेश से घटना की जानकारी ली। उसके बाद वार्ड नंबर छह के मृत झुब्बु सोनकर के घर भी पहुंचे थे। यहां की एक पीड़ित कौशलिया ने शराब के ठेके को बंद करने की मांग उठाई। नितिन पाटिल ने कहा कि महिलाएं चाह लें तो शराब का ठेका ही नहीं घर में भी शराब बंद हो सकती है। उन्होंने बुटेलखंड के गुलाबी गैंग का जिक्र करते हुए महिलाओं में ऊर्जा भी भरी। यहां से निकले तो वार्ड नंबर छह के संतराम व गुमकोटी गांव व गुमकोटी के घर जाकर शोकाकुल परिवार को सांत्वना दी। नाथ तहसीलदार फूलपुर सुशील कुमार, अधिशासी अधिकारी माहुल दिनेश चंद्र आर्य, चैयरमैन बदरे आलम, थानाध्यक्ष अहरीला संजय सिंह आदि रहे।

गाजीपुर और पूर्वांचल के विकास मे सबसे बड़ा बाधक यहाँ की माफियागिरी और बिजली की कमी रही है- डा. संजीव बलियान

प्रखर ब्यूरो सैदपुर/गाजीपुर। भारतीय जनता पार्टी सैदपुर विधानसभा का कार्यकर्ता (त्रिदेव) सम्मेलन शुक्रवार को जीबी इंटरनेशनल कालेज, डहराकला, सैदपुर में हुई। सम्मेलन को

प्राथमिकता से दूर कर प्रदेश मे निवेशकों को आने का अवसर प्रदान किया है। आगे उन्होंने कहा कि सैदपुर और गाजीपुर की जनता को रोजगार के लिए मुम्बई और दिल्ली नही जाने की जरूरत पड़ी

बलियान ने कहा की यह चुनाव सिर्फ विधायक चुनने का नही बल्कि उत्तर प्रदेश के विकास और राष्ट्र के निर्माण का चुनाव है। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि विधान परिषद

प्रियंका सिंह, निशा पांडेय ने अपने गाने के माध्यम से लोगों से भाजपा सरकार के लिए विधायक सुबाष पासी को जिताने को कहा। सम्मेलन स्थल पर विभिन्न दलों के लगभग दो दर्जन लोगों को भाजपा

अध्यक्ष सपना सिंह ने किया। अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष भानुप्रताप सिंह एवं संचालन महामंत्री दयाशंकर पांडेय ने किया। आज के सम्मेलन को जिला प्रभारी अशोक मिश्रा, विधानपरिषद सदस्य विशाल सिंह चंचल, रामतेज पांडेय, सुबाष पासी, वृजनन्दन सिंह, पंकज सिंह चंचल ने भी संबोधित किया। सम्मेलन मे

बुजनंदन सिंह, पवन सिंह, क्षीतिज मोहन सिंह, जितेंद्र पांडेय, सुनील जैन, मंगलम यादव, नरेंद्र पाठक, रूद्र प्रताप सिंह, गुलाम कादिर राइनी, मीरा श्रीवास्तव, अभय सिंह, जिला प्रभारी सुशील शशिर्कांत शर्मा, पूनम मोर्वा, अश्विनी पांडेय, श्यामकुंवर कुशावाहा, प्रवीण त्रिपाठी, शैलू सिंह आदि उपस्थित रहे।

650 लीटर अवैध अपभिमिश्रित/देशी कच्ची शराब बरामद, दो गिरफ्तार

मऊ। पुलिस अधीक्षक सुशील घुले के निर्देशन में विधानसभा चुनाव-2022 के दृष्टिगत अवैध शराब कारोबार, कारोबारियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में बुधवार को जनपद के विभिन्न थानों द्वारा देखाभाल क्षेत्र व चेकिंग के दौरान थाना मधुबन पुलिस व स्वाट टीम द्वारा जरिये मुखबिर् की सूचना पर देहलू का पुरा से 06 ड्रमों में कुल 600 लीटर अवैध देशी कच्ची शराब बरामद किया गया तथा मौके पर लगभग 8000 लीटर लहन को नष्ट करते हुए दो शराब की भंडीयों को नष्ट किया गया जबकि भौगोलिक परिस्थितियों का फायदा उठाते हुए अभियुक्तगण भागने में सफल रहे। इस सम्बन्ध में 02 आरोपियों के विरुद्ध थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 51/22 धारा 60,60(2) आबकारी अधिनियम का अभियोग पंजीकृत कर चालान न्यायालय किया गया। थाना कोषागंज पुलिस द्वारा सहरोज बाईपास से अशरफ अली पुत्र सगीर अहमद निवासी शिवपुर गाढ़ा थाना कोषागंज के कब्जे से एक जरिकेन में 20 लीटर अवैध देशी कच्ची शराब, थाना चिरैयाकोट पुलिस द्वारा गोलू पुत्र धर्मद उर्फ दोला निवासी बाबीपुर सुल्तानीपुर थाना चिरैयाकोट के कब्जे से एक जरिकेन 30 लीटर अवैध देशी कच्ची शराब बरामद कर गिरफ्तार किया गया।

जिलाध्यक्ष भानुप्रताप सिंह एवं जिला प्रभारी अशोक मिश्रा ने पार्टी पट्टा पहनाकर भाजपा की सदस्यता ग्रहण कराया और जिलाध्यक्ष ने कहा कि गाजीपुर के विकास के लिये भाजपा ने हर संभव प्रयास किया है और कर रही है। कार्यक्रम का आभार धन्यवाद जिला पंचायत



सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय पशुधन, मत्स्य पालन एवं डेयरी मंत्री डा. संजीव बलियान ने कहा कि गाजीपुर और पूर्वांचल के विकास मे सबसे बड़ी बाधक यहाँ की माफियागिरी और बिजली की कमी रही है, जिसे उत्तर प्रदेश मे योगी आदित्यनाथ की सरकार ने

होती अगर पुर्व कि सरकारों इन समस्याओं पर स्पष्ट सोच और नियत के साथ कारगर उपाय कि होती। उन्होंने कहा की विगत पाँच वर्षों मे सरकार ने विकास के नये माप दंडो के साथ लोगों के जीवन को हर प्रकार की सुरक्षा और सम्मान प्रदान किया है। डा. संजीव



सदस्य श्री चंद्र शर्मा ने कहा की राष्ट्रीय स्वाभिमान, जन जन के विश्वास पर खरा तथा समाज के अंतिम व्यक्ति तक के सुरक्षा, समृद्धि और सम्मान के लिए काम करने वाली भाजपा जैसा कोई राजनीतिक संगठन नहीं है। कार्यक्रम मे लोकप्रिय गायिका

जिलाध्यक्ष भानुप्रताप सिंह एवं जिला प्रभारी अशोक मिश्रा ने पार्टी पट्टा पहनाकर भाजपा की सदस्यता ग्रहण कराया और जिलाध्यक्ष ने कहा कि गाजीपुर के विकास के लिये भाजपा ने हर संभव प्रयास किया है और कर रही है। कार्यक्रम का आभार धन्यवाद जिला पंचायत

जौनपुर में गुस्से से तमतमा गए सपा प्रत्याशी

साइकिल को टोट डालने की कर रहे थे अपील, माइक खराब हुआ तो पटककर तोड़ दिया

प्रखर जौनपुर। चुनाव प्रचार के दौरान सपा प्रत्याशी गुस्से से इतना तमतमा गए कि उन्होंने माइक ही पटक दिया। अब उनका माइक पटकने का वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। विपक्षी दल के कार्यकर्ता वीडियो पोस्ट कर सपा प्रत्याशी के इस कारनामे पर तंज कर रहे हैं। कार्यालय के उद्घाटन में पहुंचे थे सपा प्रत्याशी समाजवादी पार्टी ने सदर विधानसभा से अरशद खान को प्रत्याशी बनाया है। दरअसल, गुरुवार की शाम सपा प्रत्याशी अरशद खान सदर क्षेत्र के इमामपुर में एक कार्यालय के उद्घाटन में पहुंचे थे। वहां पर कार्यालय उद्घाटन के बाद वो कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए अरशद खान उनमें जोश भर रहे थे। गुस्से में पटक दिया माइक वो कह रहे थे कि 'अखिलेश यादव को मुख्यांमत्री बनाने के लिए आप सभी लोग अरशद खान बन जाएं। उनकी आवाज धीरे से आ रही थी।



इसी बीच किसी कार्यकर्ता ने उन्हें माइक थमा दिया। अरशद खान ने फिर से साइकिल पर वोट डालने की अपील की, लेकिन इसी दौरान माइक काम करना बंद कर दिया। इस कारण से सपा प्रत्याशी को इतना गुस्सा आया कि उन्होंने माइक ही पटक दिया। सोशल मीडिया पर धिर गए नेता जी इस

दौरान कई कार्यकर्ता उनका वीडियो बना रहे थे। गुस्से में माइक पटकने का वीडियो किसी ने सोशल मीडिया पर डाल दिया। देखते ही देखते वीडियो वायरल हो गया। सोशल मीडिया यूजर इस वीडियो को लेकर सपा प्रत्याशी की जमकर खिंचाई कर रहे हैं। अरशद खान पर मानहानि

का परिवाद दर्ज - सपा नेता तेज बहादुर मौर्य की शिकायत पर दीवानी न्यायालय ने सपा प्रत्याशी अरशद खान पर मानहानि का परिवाद दर्ज किया गया है। इस मामले में 4 मार्च की तिथि तय की गई है। तेज बहादुर मौर्य का आरोप है कि अरशद खान ने नामांकन के बाद उन्हें भ्रमाफिया बताया था।

भाजपा नेता इं कृष्णा चौरसिया ने भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में किया जनसंपर्क मांगा समर्थन

योगी जी के नेतृत्व में पुनः बनेगी भाजपा की सरकार - इंजीनियर कृष्णा चौरसिया

प्रखर सन्तकबीरनगर। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष प्रत्याशी व जिला पंचायत सदस्य इंजीनियर कृष्णा चौरसिया ने भाजपा प्रत्याशी गणेश चौहान के पक्ष में धनघटा विधानसभा क्षेत्र के दर्जनों गांव में जनसंपर्क कर लोगों से आवाहन किया कि आगामी 3 मार्च को कमल के फूल पर बटन दबाकर भाजपा प्रत्याशी गणेश चौहान को भारी बहुमत से जिताए। उन्होंने कहा कि पार्टी के कार्यकर्ताओं के बदौलत एक बार फिर भाजपा की सरकार प्रदेश में बने जा रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा के पक्ष में समाज का हर वर्ग अपना मतदान करने के लिए तैयार है। आगामी 10 मार्च को पूर्ण बहुमत के साथ प्रदेश में भाजपा सरकार बनेगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री के नेतृत्व में विकास का जो ग्राफ बढ़ा है। उसी का परिणाम है कि समाज का हर वर्ग भाजपा के पक्ष में मतदान करने का पूरी तरह से मन बना लिया है। आम जन का भाजपा पर विश्वास बढ़ा है। श्री चौरसिया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में विकास का जो ग्राफ बढ़ा है उसी का परिणाम है कि समाज का हर वर्ग भाजपा के पक्ष में मतदान करने का पूरी तरह से मन बना लिया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में राष्ट्रवाद विकास व सुशासन के मुद्दे पर जो कार्य किया है वह सबके सामने है।



जिला निर्वाचन अधिकारी ने किया प्रशिक्षण का निरीक्षण

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। जिला निर्वाचन अधिकारी ने पीजी कालेज में मतदान के लिए चल रहे प्रशिक्षण का निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारियों को जानकारी दी। पीजी कालेज में बनाए गए प्रशिक्षण केंद्र में पीठासीन अधिकारी एवं मतदान अधिकारी का प्रशिक्षण ट्रेनरो द्वारा लगाया दिया जा रहा है। शुक्रवार को भी प्रशिक्षण का कार्य जारी रहा। जिला निर्वाचन अधिकारी एम.पी. सिंह ने प्रशिक्षण का निरीक्षण किया। इस दौरान कुछ मास्टर ट्रेनरो के साथ-साथ पीठासीन एवं मतगणना अधिकारियों को चुनाव को सफुल संपन्न कराने एवं सही ढंग से सुचारु रूप से सीखने की अपेक्षा करते हुए जानकारी दी।



उनसे अपील किया प्रशिक्षण में किसी प्रकार के दिक्कत-परेशानी आए तो तत्काल अपने मास्टर ट्रेनरो से तब तक जानकारी ले, जब तक पूरी तरह से शिक्षा ग्रहण

न हो जाए। जिला निर्वाचन अधिकारी ने परिसर का भी स्थलीय निरीक्षण करते हुए संबंधितों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया।

ईएमटी ने सूझबूझ से एंबुलेंस में कराया सुरक्षित प्रसव

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। जनपद में संचालित 108 व 102 एंबुलेंस सुचारु रूप से अपनी सेवाएँ दे रही हैं। गर्भवती को आपात स्थिति में सुरक्षित प्रसव कराने में महत्ती भूमिका निभा रही हैं। कुछ ऐसा ही बुधवार को मनिहारी ब्लॉक में देखने को मिला। जहाँ 102 एंबुलेंस के लिए मनिहारी ब्लॉक के बुजुर्गा गांव से कॉल किया गया था। इसके बाद करीब 15 मिनट में 102 एंबुलेंस मौके पर पहुंची और गर्भवती को स्वास्थ्य केंद्र के लिए लेकर निकली। रास्ते में ही प्रसव पीड़ा बढ़ गई और आपात स्थिति में इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन (ईएमटी) की सूझबूझ से एंबुलेंस में ही सुरक्षित प्रसव कराया गया। 108 एंबुलेंस के ब्लॉक प्रभारी

दीपक राय ने बताया कि मनिहारी ब्लॉक के बुजुर्गा गांव की सीमा को प्रसव पीड़ा होने पर 102 एंबुलेंस को कॉल किया गया था, जिसके बाद पायलट सदन सिंह और

और उसके पश्चात जच्चा और बच्चा को मनिहारी स्वास्थ्य केंद्र पर भर्ती कराया गया, जहां पर दोनों स्वस्थ बताए गए। दीपक ने बताया कि एंबुलेंस में प्रसव होने से परिवार के लोग परेशान थे, लेकिन एंबुलेंस में ही प्रसव होने से परिवार के लोगों ने विभाग को सराहना की। उन्होंने बताया कि जनपद में एंबुलेंस में सुरक्षित प्रसव की संख्या लगभग 250 पहुंच चुकी है, जो अपने आप में एक बड़ी कामयाबी है। उन्होंने बताया कि जनपद में 102 एंबुलेंस की संख्या 42 है, जिससे करीब 11000 लाभाधिक्य को सेवा दी गई है। वहीं 108 एंबुलेंस की संख्या 37 है जिससे करीब 40,000 मरीजों को स्वास्थ्य लाभ दिया गया है।



ईएमटी कन्हैया कुशवाहा द्वारा त्वरित रिसांस करते हुए लोकेशन पर पहुंच कर गर्भवती को स्वास्थ्य केंद्र लेकर निकले। रास्ते में ही पीड़ा बढ़ जाने की वजह से एंबुलेंस में प्रसव कराना पड़ा। ईएमटी की मदद से सुरक्षित प्रसव कराया गया

पिंडरा खण्ड के 36 गांवों में चला अभियान

प्रखर पिंडरा वाराणसी। पिंडरा विकासखण्ड के औसत से कम मतदान वाले 36 ग्राम सभा में एक साथ जन जागरण अभियान चलाया गया। बेसिक शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य, पंचायत व बाल विकास के तत्वाधान में संयुक्त रूप से आयोजित मतदाता

ग्रामीण महिला पुरुषों को लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए बढ़ चढ़कर मतदान में हिस्सा लेने की अपील की गई। साथ ही पहले मतदान फिर जलपान का संकल्प दिलाया गया। ब्लॉक के नोडल प्रभारी अखिलेश मिश्रा ने बताया कि

राजस्थान सरकार द्वारा सरकारी कर्मियों को पुरानी पेंशन योजना पुनः लागू किए जाने पर जतायी सुशी

प्रखर रोहतास। रोहतास जिला (सासाराम) राजस्थान सरकार द्वारा सरकारी कर्मियों को पुरानी पेंशन योजना पुनः लागू किए जाने पर बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी, राजीव गांधी पंचायती राज संगठन बिहार प्रदेश उपाध्यक्ष एवं आल इंडिया रेलवे शु-शार्डन वर्कर्स यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राम ने खुशी जतायी है। ओमप्रकाश राम ने कहा कि देश के अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री एवं भारत के प्रधानमंत्री को राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की कांग्रेस सरकार से सीख लेते हुए पुरानी पेंशन योजना को लागू करना चाहिए। 1 जनवरी 2004 से सरकारी कर्मियों के पेंशन को बंद कर दिया गया था। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जो राजस्थान सरकार के तंज पर बिहार में जनवरी 2004 से सरकारी कर्मियों के पेंशन को बंद कर दिया गया था उसे पुनः लागू करें।



जागरूकता कार्यक्रम में शुक्रवार को एक साथ 36 ग्राम सभा में मतदान में हुए औसत से कम मतदान को देखते हुए मतदाता जागरूकता रैली व संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें

रामपुर, बिंदा फूलपुर, चुपेपुर, पिण्डराई, समोहरा, गरखड़ा, हीरामपुर, मानी समेत 36 गांव के मतदान केंद्र पर अधिक मतदान के लिए कार्यक्रम आयोजित किए गए।

समता मूलक समाज की स्थापना ही गांधी का सपना : प्रेम प्रकाश

प्रेम, सम्मान व भाईचारे की भावना का हो प्रसार: फ्रांसिस डिसूजा, राइज एंड एक्ट के तहत राष्ट्रीय एकता शांति व न्याय विषयक तीन दिवसीय प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण शिविर का हुआ शुभारंभ

प्रखर वाराणसी। नवसाधना, तरना में राइज एंड एक्ट के तहत "राष्ट्रीय एकता शांति व न्याय" विषयक तीन दिवसीय प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। जिसमें समता मूलक विचार, लोकतंत्र, वर्तमान परिस्थितियों, मीडिया व पूंजीवाद की भूमिका पर चर्चा की गई। मुख्य वक्ता प्रेमप्रकाश ने लोकतंत्र पर मंडरा रहे खतरों के प्रति आगाह करते हुए कहा कि समाज में लोगों के बीच ज्यादा काम करने की जरूरत है। लोक शाही सबसे अच्छी व्यवस्था है। हमारे मनीषियों ने जो सपने देखे थे आज कुछ साम्प्रदायिक ताकतों उनपर प्रश्नचिह्न लगा रही हैं। यह देश एक बाग की तरह है और नफरत, भेद की राजनीति विनाश का कारण बनेगा। हम मतदाता हैं अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी तभी



संवैधानिक मूल्यों की रक्षा होगी। समता मूलक समाज की स्थापना से ही गांधी का सपना साकार होगा। उन्होंने मीडिया पर कहा कि मीडिया को प्रसार सबके दिलों में होना चाहिए। सामाजिक कार्यकर्ता लाल प्रकाश राही ने नई आर्थिक नीति पर चर्चा करते हुए कहा कि उत्पादन व उसके संसाधनों पर जिनका कब्जा होता है लाभ उन्हीं को जाता है और बाजार में उत्पादों के मूल्य उपभोक्ताओं से वसूल जाते हैं जो खुली लूट है। सार्वजनिक संसाधनों के निजीकरण से जनता

त्रस्त रहती है। पूंजीवादी व मिश्रित अर्थ व्यवस्था के बजाय समाजवादी अर्थ व्यवस्था कागर्भ है जिसमें सबकी सुविधा का ख्याल होता है। सुरेश कुमार अकेला ने कहा कि अंग्रेजों ने देश में फूट डालो और राज करो की नीति अपनाई। आज मुक्त पर साम्प्रदायिक

ताकतों का कब्जा बढ़ता जा रहा है। साम्प्रदायिकता, जातिवाद व नफरत की राजनीति से अक्सर वार्डियों को फायदा होगा। इससे पूर्व संचालन कर रहे आयोजक प्रो मोहम्मद आरिफ ने कई जनपदों से आये ट्रेनरों का परिचय करते हुए कहा कि देश के बदल रहे हालात में सच्चे नागरिकों की भूमिका अहम हो गयी है। हमें सुखी, समृद्ध भारत निर्माण के लिए आगे आना होगा और अपना योगदान देना होगा तभी एक बेहतर समाज का निर्माण होगा। सभी ने अपने चुने हुए मुद्दे पर लिखे लेखों पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षकों के प्रश्नों के उत्तर वक्ताओं ने सहजता से दिए। इस दौरान संजय सिंह, राम जनम, राम किशोर चौहान, साधना यादव, असलम, वीना गौतम, अर्शिया खान, प्रज्ञा, रीता सिंह, शमा परवीन, अब्दुल मजीद, राम कृत आदि मौजूद रहे।

रिंग रोड फेज -2 का काम बरियासनपुर के किसानों ने रोका

प्रखर पूर्वांचल वाराणसी। किसान नेता अशोक प्रजापति ने बताया कि रिंग रोड फेज- 2 बरियासनपुर में अंडरपास बनाने की मांग को लेकर किसानों ने आज बृजेश कुमार पटेल (अंतरराष्ट्रीय कोच खेल विभाग) व महिला किसान नेत्री अहिल्या पटेल के संयुक्त नेतृत्व में रिंग रोड फेज2का काम रोका मौके पर एनएचएआई के अधिकारियों से वार्ता करते



हुए बृजेश कुमार पटेल ने कहा कि जब तक अंडर पास नहीं बन जाता है तब तक हम लोग नहीं हटेंगे और धरना हमारा जारी रहेगा आज धरना का 72 वां दिन है और किसानों ने कहां एनएचएआई के पी.डी और जिला प्रशासन बार-बार वादा करने के बाद भी यहां पर अंडर पास नहीं बनाए इसलिए आज किसानों को काम

रोकना पड़ा और तब तक रोकेंगे जब तक अंडरपास नहीं बन जाता है जरूरत पड़ी तो हम लोग भूख हड़ताल जारी करेंगे अर्थनम प्रदर्शन करेंगे चक्का जाम करेंगे और माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का 27 को वाराणसी आगमन है यदि हमारी मांग पूरी

नहीं होती है किसान उनका विरोध करेंगे उक्त धरना प्रदर्शन में लक्ष्मी नारायण पटेल लालजी, पटेल श्याम जी, राम किशुन, राकेश पटेल, अजय मौर्य, प्रेमलता पटेल, अहिल्या पटेल, निर्मला पटेल, उर्मिला देवी, धनरादेवी, शीला पटेल, गीता पटेल, पूजा देवी, सविता पटेल, सूरिता पटेल, इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

जिला पर्यटन अधिकारी ने वाराह धाम के सुंदरीकरण की जांच की



प्रखर चन्दवक जौनपुर। जिले की पर्यटन अधिकारी मीनाक्षी यादव ने गुरुवार को केराकत ब्लाक क्षेत्र के रामगढ़ गांव में स्थित वाराह कोटि तीर्थ धाम के सुंदरीकरण कार्य का निरीक्षण किया। इस मौके पर उन्होंने टेकेदार से अधूरे कार्यों को शीघ्र पूरा करने का निर्देश दिया। मुख्यांमत्री संवर्धन योजना के अंतर्गत पर्यटन विकास के क्रम में रामगढ़ गांव में गोमती नदी के किनारे स्थित वाराह कोटि तीर्थ धाम का 50 लाख रुपए की लागत से सुंदरीकरण कार्य किया जा रहा है। सुंदरीकरण कार्य के बीच में कार्य की गुणवत्ता पर सवाल उठने लगे थे। जिसके बाद पर्यटन अधिकारी ने मौके पर पहुंचकर जांच की थी और कुछ मानक के विपरीत हुए कार्यों और उसकी गुणवत्ता को ठीक करवाया था। इस मौके पर प्रोजेक्ट मैनेजर विनय कुमार, दिलीप तिवारी समेत मंदिर के पुजारी और अन्य ग्रामीण मौजूद रहे।

एन.एस.एस के सात दिवसीय विशेष शिविर के चौथे दिन का थीम रहा स्वच्छता और सुरक्षा



प्रखर जौनपुर। कुटीर पीजी कॉलेज चक्के में 22 फरवरी से आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष शिविर के चौथे दिन शुक्रवार को शिविरार्थियों ने कैम्प में स्वच्छता विषय के अंतर्गत महाविद्यालय एवं आस-पास के गांवों में स्वच्छता अभियान चलाया और साफ सफाई की। शिविर में स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ एन पी मिश्रा और कार्यक्रम अधिकारी डॉ श्रीनिवास तिवारी के निदेशन में आयोजित हुआ। शिविर के छात्र छात्राओं ने ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत निकट गांवों में जाकर झाड़ू लगाया और ग्रामीणों को स्वच्छता अपनाने हेतु प्रेरित किया। अभियान के दौरान शिविरार्थियों के सहयोग हेतु महाविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के अस्सिस्टेंट प्रोफेसर डॉ संजय यादव और जैव प्रौद्योगिकी विभाग के शिक्षक एवं पत्रकार पंकज कुमार मिश्रा जी रहे। चौथे दिन के विशेष संगोष्ठी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रेंहटी जलालपुर की डॉक्टर डॉ नंदिनी जायसवाल रही। संगोष्ठी की शुरूआत डॉक्टर नंदिनी जायसवाल ने मां सस्वती और पूज्य संस्थापक जी के छायाचित्र पर पुष्पांजलि और दीप प्रज्वलन करके किया। उन्होंने अपने संछिन्न संबोधन में स्वास्थ्य जागरूकता और बच्चियों में स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं पर चर्चा की। कार्यक्रम में बोलते हुए मुख्य अतिथि ने कहा की अपने चारों तरफ स्वच्छता अपनाकर हम समाज को सुरक्षित रख सकते हैं। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के कृष्ण कुमार मिश्रा, अखिलेश मिश्रा, सुरेश कुमार इत्यादि उपस्थित रहे। मंच संचालन अवैतिका मिश्रा ने किया।

अजगरा में भाजपा के एलईडी वैन पर युवकों का धावा

वैन पर लगे फ्लैक्स को फाड़ने के साथ ही वैन चालक और ऑपरटर को भी पीटा, पुलिस कर रही जांच

प्रखर दामनंज वाराणसी। जिले के अजगरा विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी के प्रचार में लगे वैन का तेवर गांव में कुछ युवकों द्वारा विरोध किया। गांव के युवकों ने वैन में लगे भारतीय जनता पार्टी के फ्लैक्स को फाड़ दिया। उसके बाद वैन चालक और एलईडी ऑपरटर के साथ भी मारपीट किए। इस मामले में अजगरा विधानसभा के प्रचार प्रसार प्रमुख सतीश सिंह द्वारा चोलापुर थाने में तहरीर दी गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। सतीश सिंह का आरोप है कि भाजपा के प्रत्याशी के प्रचार प्रसार में एलईडी वैन आज सुबह 11:15 बजे चोलापुर थाना क्षेत्र के तेवर गांव में पहुंचा। वहां पर पहले से मौजूद तेवर गांव के रहने वाले कुछ विशेष समुदाय के 8 से 10 लोग मिलकर प्रचार वाहन पर धावा बोल दिए। लोगों ने ड्राइवर अखिलेश और योगेश यादव को गाड़ी से खींच कर मारा-पीटा। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि इस दौरान उन लोगों ने प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को भद्दी भद्दी गालियां देते हुए गाड़ी पर लगा फ्लैक्स फाड़ दिए। इस मामले में तहरीर के आधार पर चोलापुर पुलिस द्वारा आवश्यक कार्रवाई करते हुए जांच पड़ताल की जा रही है।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरुण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेशबाबा नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोड: 233001 से छपावकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालय: 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोड: 233001 सम्पर्क सूत्र: 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होंगे।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट https://prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं